



अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

“
भिक्षु वाणी

जीव विमासी जोय तूं, विषय म राच गिवार।
थोड़ा सुखों रे कारण, मूरख घणा म हार।।

हे जीव! तू विचार कर देख, हे मूढ़!
विषय में आसक्त मत बन। थोड़े सुखों
के लिए बहुत सुखों को मत गवां।

-आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली

वर्ष 27 • अंक 50 • 14 सितम्बर - 20 सितम्बर 2026



प्रत्येक सोमवार

प्रकाशन तिथि : 12-09-2026 • पेज 20

₹ 10 रुपये



तन कर, मन कर, वचन कर,
देत न काहु दुःख; तुलसी
पातक झरत हैं, देखत वा को
मुख : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 02



धर्मकथा से होती है कर्मों
की निर्जरा और शासन
की प्रभावना : आचार्यश्री
महाश्रमण

पेज 19

Address
Here

लाडनूं सुधर्मा सभा में 'तप से क्या मिलेगा?' विषय पर गुंजी पावन देशना

तपस्या का उद्देश्य हो कर्म-निर्जरा, न कि सांसारिक सुख की चाह : आचार्यश्री महाश्रमण

'अमृतवाणी' के नए अध्यक्ष मदनचन्द दूगड़ व नवनिर्वाचित टीम को दिया पावन आशीर्वाद

लाडनूं।

05 सितम्बर, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता, अखंड परिव्राजक, शांतिदूत, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने सुधर्मा सभा में 'तप से क्या मिलेगा?' विषय पर उत्तरजज्ञयणाणि आगम के माध्यम से चतुर्विध धर्मसंघ को पावन संबोध प्रदान किया। पूज्य प्रवर ने तप के १२ भेदों, जीवन में ऊनोदरी के प्रयोग और कर्म-निर्जरा के आगमिक रहस्य पर विस्तृत प्रकाश डाला।

तप और निर्जरा में कार्य-कारण संबंध:

१. जैन शासन में प्रसिद्ध तप : पूज्य आचार्यश्री ने फरमाया कि 'तप' जैन शासन में अत्यंत प्रसिद्ध है और नव तत्त्वों में निर्जरा तत्त्व से भी सीधा जुड़ा हुआ है।

२. कार्य-कारण की भिन्नता : कर्म झड़ने से आत्मा की जो शुद्धि होती है, वह निर्जरा है। निर्जरा और तप में कार्य-कारण का भेद है—तप 'कारण' है और निर्जरा उसका 'कार्य' है। अभेदोपचार से तप के जो १२ भेद हैं, वे निर्जरा के भी १२ भेद कहे जा सकते हैं।

३. व्यवदान (कर्म-मुक्ति) की प्राप्ति : आगमिक प्रश्न 'तप से क्या लाभ होता है?' का उत्तर देते हुए पूज्यश्री ने स्पष्ट किया कि तप से जीव 'व्यवदान' को प्राप्त करता है। व्यवदान का अर्थ है—पूर्व संचित कर्मों की निर्जरा। तपस्या से कर्मों का क्षय होने पर जीव को कर्म-बंधनों से पूर्ण मुक्ति प्राप्त हो सकती है।



“
भोजन ही नहीं, भाषा
और कषाय में भी
ऊनोदरी रखना संयम की
सच्ची साधना है
-आचार्यश्री महाश्रमण

बाह्य व आभ्यंतर तप का सूक्ष्म
आगमिक विवेचन : (६ बाह्य तप)

१. अनशन : उपवास, बेला, तेला, अठाई, मासखमण आदि अनाहार से संबंधित तप अनशन के ही अंग हैं। जीवन के अंतिम समय में संथारा स्वीकार करना भी तप का ही एक रूप है।

२. ऊनोदरी: भूख से कम खाना ऊनोदरी है। साधु व गृहस्थ दोनों को भोजन के साथ-साथ वस्त्र, पात्र व उपकरणों का भी अनावश्यक संग्रह न कर ऊनोदरी रखनी चाहिए।

आखिर कैसे अश्रु बहते ही पूरे हो गए कठिन संकल्प?..

१. भगवान महावीर और चंदनबाला : आचार्य श्री ने भगवान महावीर द्वारा गोचरी (भिक्षा) के लिए किए गए अत्यंत कठिन 'अभिग्रह' का स्मरण कराया। पूज्य प्रवर ने फरमाया कि जब चंदनबालाजी की आँखों में करुणा के आँसू छलके, तब भगवान के सारे अभिग्रह पूरे हुए और उन्हें दान देने का दुर्लभ अवसर प्राप्त हुआ। यह प्रसंग सिखाता है कि एक साधक का संकल्प कितना शक्तिशाली और महत्वपूर्ण होता है।

२. मुनि सुखलाल जी स्वामी का उल्लेख : आचार्य श्री ने 'घोर तपस्वी' मुनि सुखलाल जी स्वामी की सेवा-भावना की विशेष सराहना की। पूज्य प्रवर ने फरमाया कि जब किसी तपस्वी के

जीवन में तपस्या के साथ-साथ सेवा का भाव भी जुड़ जाता है, तो वह 'सोने में सुहागा' के समान हो जाता है।

'घोर तपसी हो मुनि! घोर तपसी!'
'थारो जाप जप्यां करमां री कोड़ खपसी,
हो मुनि...

३. साध्वी पत्नी जी का व्यक्तित्व : 'दिव्य तपस्विनी' और 'दीर्घ तपस्विनी' साध्वी पत्नी जी का भावपूर्ण स्मरण करते हुए पूज्य प्रवर ने फरमाया कि वृद्धावस्था में भी वे निरंतर तप और सेवा में लीन रहती थीं। अपनी इसी अद्भुत तपस्या और निस्वार्थ सेवाभाव के कारण वे पूरे समाज में अत्यंत लोकप्रिय थीं।

३. विशेष ऊनोदरी प्रेरणा : पूज्यश्री ने फरमाया कि कषाय की भी ऊनोदरी होनी चाहिए और अपने भाषण में भी ऊनोदरी का प्रयास हो—अर्थात् अपनी बात को कम से कम शब्दों में रखने का प्रयास होना चाहिए।

४. अन्य बाह्य भेद : विगयवर्जन (रसपरित्याग), अभिग्रह, काय-क्लेश/कायोत्सर्ग/आसन और प्रतिसंलीनता (इंद्रियों व योगों का प्रतिसंहरण)।

जो उपवास न कर सके, वह ५ विगय टालकर मन के संयम से विगयवर्जन रूपी तप कर सकता है।

५. आभ्यंतर तप : प्रायश्चित्त, विनय (बड़ों की वंदना व सम्मान), वैयावृत्य (अग्लान भाव से सेवा), स्वाध्याय, व्युत्सर्ग और ध्यान। पूज्यश्री ने फरमाया कि सेवा अग्लान भाव से करनी चाहिए तथा स्वाध्याय भी तप का ही रूप है।

अमृतवाणी का वार्षिक अधिवेशन व

मगन हाजिर है!...

(जब मगन मुनि ने प्रोटोकॉल
की परवाह नहीं की...)

आचार्यश्री महाश्रमण जी ने परम पूज्य कालूगणी के अंतिम समय का अत्यंत मार्मिक एवं आत्मीय प्रसंग साझा किया।

१. संकेत द्वारा बुलावा: आचार्य श्री ने फरमाया कि कालूगणी जी को जब अपने अंतिम समय का आभास हुआ, तो उन्होंने मुनि मगनलाल जी को याद किया और तुरंत अपने पास बुलाया।

२. अटूट आत्मीयता : सूचना मिलते ही मुनि मगनलाल जी अत्यंत तीव्र गति से सीढ़ियाँ चढ़कर पूज्य गुरुदेव के पास पहुँचे, और कहाँ मगन हाजिर है! आचार्यश्री ने दोनों के बीच के बरसों पुरानी मित्रता, प्रगाढ़ गुरु-शिष्य भाव का उल्लेख किया।

३. मर्यादा से ऊपर भक्ति : उस समय युवाचार्य तुलसी भी वहीं उपस्थित थे। परंतु मगन मुनि ने बिना किसी बाहरी औपचारिकता या प्रोटोकॉल की परवाह किए, तुरंत स्वयं ही कालूगणी जी को संथारा (अंतिम अनशन) पचकाने की विधि संपन्न कराई।

नवीन टीम की घोषणा:

'अमृतवाणी' के वार्षिक अधिवेशन का मंचीय उपक्रम आयोजित हुआ। अमृतवाणी की ओर से एक विशेष वीडियो प्रस्तुत किया गया। तत्पश्चात अमृतवाणी के नवनिर्वाचित अध्यक्ष मदनचन्द दूगड़ ने अपनी भावपूर्ण श्रद्धाभिषेक्ति प्रस्तुत की और आचार्य श्री के समक्ष अपनी नवीन कार्यकारिणी टीम के नामों की घोषणा की।

पावन मंगल आशीर्वाद:

अमृतवाणी की नवनिर्वाचित टीम को पावन पाथेय प्रदान करते हुए पूज्य आचार्यश्री ने फरमाया कि 'अमृतवाणी के पास इतिहास का खजाना है। यह व्यवस्था का परिवर्तन हुआ है, खूब अच्छा धार्मिक व आध्यात्मिक कार्य चलता रहे।



श्रद्धा से किया तीर्थंकर नमन तारेगा भव-सागर : आचार्यश्री महाश्रमण

'मन की एकाग्रता से क्या मिलेगा' विषय पर लाडनूं में गूंजी पूज्य प्रवर की पावन देशना

लाडनूं।

03 सितम्बर, 2026

जन-जन के मानस को आध्यात्मिक संपोषण प्रदान करने वाले तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान अधिशास्ता, अणुव्रत अनुशास्ता, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने चतुर्विध धर्मसंघ को 'मन की एकाग्रता से क्या मिलेगा?' विषय पर अमृत देशना प्रदान की। पूज्य प्रवर ने मन की चंचलता को वश में कर चित्त निरोध और कषाय मंदता प्राप्त करने का आगमिक मार्ग दिखाया।

संज्ञी व असंज्ञी मनुष्य का सूक्ष्म तात्त्विक विवेचन :

१. असंज्ञी मनुष्य का अस्तित्व व १४ स्थानक : पूज्य आचार्यश्री ने फरमाया कि हम संज्ञी (मन वाले) मनुष्य हैं। जैन तत्त्व विद्या में असंज्ञी मनुष्य भी मान्य हैं, जो इतने सूक्ष्म हैं कि सामान्यतया हमारी आँखों से अदृश्य रहते हैं। इन असंज्ञी मनुष्यों की उत्पत्ति मनुष्य के मल-मूत्र आदि १४ स्थानकों से होती है।

२. पाँच इन्द्रियाँ व अपर्याप्त स्थिति : असंज्ञी मनुष्य भी पंचेन्द्रिय प्राणी होते हैं, किन्तु वे अपर्याप्त स्थिति के होते हैं।

”

जीवन में कभी तेज आवेश न आए और न ही आवेश पूर्ण भाषा बोलें; मन को सदा शांत रखें
-आचार्यश्री महाश्रमण

इसके बावजूद उन्हें मनुष्य का ही दर्जा प्राप्त है।

३. बालक के राज्याभिषेक का दृष्टांत : पूज्यश्री ने दृष्टांत देकर समझाया कि जैसे किसी छोटे बालक का राज्याभिषेक कर देने पर वह आयु कम होने पर भी 'राजा' ही कहलाता है, ठीक उसी प्रकार असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीव को भी मनुष्य माना गया है।

मन, वचन और काया : चेतना के तीन कर्मकर (कर्मचारी) :

१. तीन योगों का कार्य: संज्ञी मनुष्य के पास शरीर, वाणी और मन—ये तीन चेतना के कर्मकर (कर्मचारी) हैं। शरीर से चलना-फिरना, बैठना, गोचरी-पानी, हाथ जोड़कर वंदना करना और दान देना आदि कार्य होते हैं। विचार वाणी के रथ



पर आरूढ़ होकर आगे बढ़ते हैं। सामने वाले में श्रवण क्षमता और स्वयं में प्रज्ञा हो तो ज्ञान हृदयंगम होता है।

२. मन की चंचलता पर नियंत्रण : विहार-यात्रा, भोजन, भजन या जप-तप करते समय भी मन निरंतर चलता रहता है। मन की इस चंचलता और गतिशीलता को चेतना पर हावी नहीं होने देना चाहिए।

मन की दो अवस्थाएं: व्यग्रता बनाम एकाग्रता (चित्त निरोध) :

१. व्यग्र व एकाग्र मन: मन का विविध आलंबनों पर भटकना 'व्यग्र अवस्था' है और किसी एक आलंबन पर केंद्रित हो जाना 'एकाग्र अवस्था' है।

२. शुभ आलंबन से निर्जरा : मन को खराब विषयों में लगाने के बजाय अरहंत, सिद्ध और परमेश्वरी जैसे वीतरागी

आलंबनों में लगाना चाहिए ताकि राग-द्वेष मुक्त स्थिति बने। शुभ आलंबन पर मन स्थापित करने से जीव चित्त का निरोध करता है और निर्जरा का बड़ा लाभ मिलता है।

प्रेक्षाध्यान, कषाय मंदता और भाषा संयम :

१. प्रेक्षाध्यान का उपक्रम : मन को एकाग्र करने के लिए प्रेक्षाध्यान का प्रशिक्षण अत्यंत उपयोगी है।

२. साधना की मुख्य निष्पत्ति: ध्यान, सेवा, स्वाध्याय और अनुप्रेक्षा करने की अंतिम निष्पत्ति (परिणाम) कषाय की मंदता होनी चाहिए। व्यक्ति को प्रयास करना चाहिए कि जीवन में तेज आवेश न आए, आवेश पूर्ण भाषा न बोली जाए और कषाय मंद रहे।

22 = 82? मगन मुनिजी की अलौकिक भविष्यवाणी...

पूज्य प्रवर ने आचार्य श्री तुलसी के आचार्य पद ग्रहण करने से जुड़े एक अत्यंत रोचक प्रसंग का वर्णन किया:

१. अल्पआयु में महान दायित्व : आचार्य श्री तुलसी मात्र 22 वर्ष की युवावस्था में आचार्य पद पर आसीन हो गए थे। जैन श्रेश्ठांश्वर तेरापंथ धर्म संघ के इतिहास में वे इतनी कम आयु में इस सर्वोच्च पद को संभालने वाले पहले आचार्य थे।

२. मगन मुनि जी का अतुलनीय योगदान : नवोदित आचार्य श्री तुलसी को संघ में सुहृद रूप से स्थापित करने और उनकी पद-गरिमा को अक्षुण्ण बनाए रखने में मुनि मगन मुनि जी ने अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

३. आयु और अनुभव का अद्भुत सामंजस्य : जब भी लोग आचार्य श्री तुलसी की कम उम्र को लेकर संशय या चर्चा करते, मगन मुनि जी अपनी प्रखर बुद्धि से बड़ा ही मर्मस्पर्शी उत्तर देते। वे कहते—'हमारे आचार्य 82 वर्ष के हैं'।

जब लोग आश्चर्यचकित होकर पूछते कि वे तो बहुत युवा दिखाई देते हैं, तब मुनि श्री स्पष्ट करते:

22 वर्ष (आचार्य श्री तुलसी की स्वयं की आयु) + 60 वर्ष (परम पूज्य गुरुदेव कालुगणी का संचित अनुभव) = 82 वर्ष का पूर्ण परिपक्व अनुभव।

४. भविष्यवाणी का अलौकिक संयोग : मगन मुनि जी की यह वाणी आगे चलकर एक अद्भुत आध्यात्मिक संयोग सिद्ध हुई। आचार्य श्री तुलसी ने अपने नश्वर जीवन के 82 वर्ष ही पूर्ण किए, 83वां वर्ष पार नहीं किया। इस प्रकार मगन मुनि जी के शब्द एक तरह से भविष्य के लिए सिद्ध वचन बन गए।

पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी का पावन संदेश: संत दर्शन और संयम है आत्म-कल्याण का मार्ग

तन कर, मन कर, वचन कर, देत न काहु दुःख; तुलसी पातक झरत हैं, देखत वा को मुख

अ.भा.ते. महिला मंडल की प्रेरणा से महिलाओं ने लिए आयंबिल के पचक्खान और दिल्ली समाज के प्रबुद्धजनों ने रखी अभिव्यक्ति

लाडनूं।

04 सितम्बर, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता, अहिंसा यात्रा प्रणेता, शांतिदूत युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने सुधर्मा सभा में 'संयम से क्या मिलेगा?' विषय पर उत्तराध्यायणाणि आगम के माध्यम से अमृत देशना प्रदान की। पूज्य प्रवर ने हेय-उपादेय के विवेक, संवर, अणुव्रत तथा ज्ञानशालाओं के महत्व पर सूक्ष्म तात्त्विक प्रकाश डाला।

पर्युपासना, विवेक और संयम की आगमिक यात्रा :

१. दर्शन व पर्युपासना का लाभ



ज्ञानशालाएं बच्चों में धार्मिक संस्कारों के बीजारोपण का श्रेष्ठ माध्यम हैं, जिससे मुमुक्षु भाव जागृत हो सकता है
-आचार्यश्री महाश्रमण

: पूज्यश्री ने फरमाया कि कोई गृहस्थ श्रमणों की पर्युपासना करता है, उनके दर्शन करता है या पास बैठता है तो मात्र दर्शन करना भी निर्जरा का कारण बन

सकता है। व्याख्यान सुनने और धर्मचर्चा से ज्ञान प्राप्त होता है और ज्ञान से 'विज्ञान' यानी हेय-उपादेय का विवेक जागृत होता है।

२. हेय और उपादेय का भेद : हिंसा, झूठ, चोरी आदि १८ पाप स्थानक 'हेय' (त्यागने योग्य) हैं, जबकि सम्यक्त्व, व्रत, निर्जरा और मोक्ष 'उपादेय' (ग्रहण करने योग्य) हैं। हेय-उपादेय का विवेक होने पर व्यक्ति पापों का त्याग-प्रत्याख्यान करता है, जिसकी निष्पत्ति संयम है।

३. अनाश्रव और संवर का विधान

पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने साधु मुख दर्शन के महत्व को रेखांकित करते हुए एक सुंदर पद्य के माध्यम से फरमाया:

**तन कर, मन कर, वचन कर, देत न काहु दुःख।
तुलसी पातक झरत हैं, देखत वा को मुख॥**

१. मुख्य बिंदु एवं भावार्थ : आत्मिक शुद्धि और कर्म-निर्जरा: जो संत तन, मन और वचन से पूर्णतः अहिंसा का पालन करते हैं तथा किसी भी जीव को लेशमात्र दुःख नहीं पहुँचाते, श्रद्धा और निश्चल भावना से ऐसे महाव्रती साधुओं के मुख का दर्शन एवं वंदन करने से भक्त के पाप

: आगम में प्रश्न किया गया कि जीव संयम से क्या प्राप्त करता है? उत्तर में बताया गया कि संयम से अनाश्रव (संवर) उत्पन्न होता है। प्रत्याख्यान करने से संयम होता है और संयम का परिणाम अनाश्रव है, जिससे नए कर्मों का आना बंद हो जाता है। सम्यक्त्व से मिथ्यात्व आश्रव और सर्व व्रत से अव्रत आश्रव का निरोध होता है।

महाव्रत, गृहस्थ धर्म और तपस्या से पुष्टिकरण :

१. साधु व गृहस्थ जीवन: साधु के

(पातक) नष्ट होते हैं और आत्मिक शुद्धि का मार्ग प्रशस्त होता है।

२. गृहस्थों के लिए प्रेरणा : आचार्य श्री ने श्रावकों को प्रेरित किया कि जब भी किसी क्षेत्र में साधु-संतों का पर्दापण या आगमन हो, तो उनके दर्शन हेतु अवश्य पहुँचें।

३. दर्शन मात्र से कल्याण : यदि समय या परिस्थिति के कारण प्रवचन सुनने का अवसर न भी मिले, तो भी भावपूर्ण साधु दर्शन स्वयं में कर्म-निर्जरा का एक बड़ा और समर्थ कारण बनता है।

५. महाव्रत (हिंसा, झूठ, चोरी, मैथुन, परिग्रह का पूर्ण त्याग) होते हैं, जिससे पूर्ण अनाश्रव की स्थिति बनती है। गृहस्थ भी यदि १२ व्रत स्वीकार कर हिंसा आदि का परिसीमन करे तो अव्रत आश्रव निरुद्ध होता है।

२. तपस्या से निर्जरा : साधु पूर्ण व्रती होते हुए भी उपवास, वेला आदि तपस्या करते हैं, जिससे संयम में और पुष्टिकरण होता है तथा अधिक निर्जरा का लाभ मिलता है। **(शेष पेज 16 पर)**

कोटि कोटि वंदन

योग्य शिष्य को पाकर निश्चित,
देखो

नगानंदन



: श्रद्धाप्रणत :

खेमचंद-ललिता देवी
विदित-प्रीति
समकित-गीतिका
संवृति, जेनिका मुकीम



श्रीMATA GEMS & JEWELS

New Delhi

Vidit Jain & Co.

New Delhi



महक उठा श्रद्धा का अंबर, गूंज उठा जयघोष नया।
शासन नंदनवन सा महका, उदित हुआ विश्वास नया।।

: श्रद्धाप्रणत :

अनिल दिलबाग राय जैन परिवार

JAINTEX GROUP OF INDUSTRIES

Jaintex

Jay Santoshi Tex Prints Pvt. Ltd, Surat

Jay Tulsi Tex Prints Pvt. Ltd, Surat

jain Tex Fab Pvt. Ltd, Surat

Dharam Sons Silk Mills Pvt. Ltd, Surat



महाश्रमण प्रभु के पट्टधर तुम, गण की नव तकदीर हो।
युवाचार्य महावीर मुनि तुम, भिक्षु की तस्वीर हो।।

श्रद्धाप्रणत
२०१९

तेरापंथ युवक परिषद, विजयनगर

पूज्य प्रवर ने 'निर्जरा से क्या मिलेगा' विषय पर किया तात्त्विक विवेचन

शुभ योग की साधना से ही संभव है कर्मों का क्षय : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं।

06 सितम्बर, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता, महातपस्वी, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने सुधर्मा सभा में 'निर्जरा से क्या मिलेगा?' विषय पर उत्तरज्ययणाणि आगम के माध्यम से चतुर्विध धर्मसंघ को पावन संबोध प्रदान किया। पूज्य प्रवर ने अध्यात्म साधना के दो आधार स्तंभों— संवर और निर्जरा, गुणस्थानों की प्रक्रिया तथा 'अक्रिया' (मोक्ष) की प्राप्ति के गूढ़ रहस्यों का विस्तृत विवेचन किया।

संवर और निर्जरा : साधना का संपूर्ण सार :

१. धार्मिक क्रियाकलाप का केंद्र : पूज्य आचार्यश्री ने फरमाया कि अध्यात्म की साधना में संवर और निर्जरा दो प्रमुख तत्त्व हैं, जिनमें संपूर्ण धार्मिक क्रियाकलाप समाविष्ट हो जाते हैं।

२. साधु चर्या में निर्जरा : साधु जब सम्यक्त्व व व्रत संवर में रहते हुए गोचरी हेतु ईर्यासिमिति के प्रति जागरूक रहकर शांत भाव से जाता है, परोपकार की भावना से व्याख्यान देता है अथवा सेवा करता है, तो शुभ योग से निरंतर निर्जरा होती है। हमारी परंपरा में मिथ्यात्वी के



भी निर्जरा होना मान्य है, लेकिन यदि संवर और चरित्र की प्राप्ति हो जाए तो सर्वाधिक निर्जरा होती है।

गुणस्थान, क्षपक श्रेणी और 'अक्रिया' का आगमिक गणित :

१. कर्मों के क्षय का क्रम : आगम में व्यवदान का फल बताया गया है कि निर्जरा से जीव अक्रिया को उत्पन्न करता है। साधना की उच्च भूमिका में साधु का सबसे पहले १२वें गुणस्थान में मोहनीय कर्म क्षीण होता है। इसके पश्चात १३वें गुणस्थान में ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय और अंतराय—ये तीनों घाती कर्म भी क्षीण हो जाते हैं।

२. क्षपक श्रेणी व पंचम काल : अक्रिय बनने के लिए मोहनीय कर्म

का क्षय अनिवार्य है, जिसके लिए ८वें गुणस्थान से क्षपक श्रेणी का रास्ता लेना पड़ता है। वर्तमान पंचम आरे में ८वां गुणस्थान उपलब्ध नहीं हो सकता, यहाँ जीव केवल ७वें गुणस्थान तक ही रह सकते हैं।

३. ५ ह्रस्वाक्षर और सिद्ध स्थिति : १४वें गुणस्थान में पूर्ण अक्रिया की स्थिति आती है, जहाँ मात्र ५ ह्रस्वाक्षरों के उच्चारण जितने समय के पश्चात जीव सिद्ध, प्रशांत, मुक्त और परिवर्णित होकर समस्त दुःखों का अंत कर देता है।

अशुभ योग से अयोग की ओर आध्यात्मिक यात्रा :

१. मानव जीवन का सौभाग्य : मानव जीवन प्राप्त होना, संजी मनुष्य

मानव जीवन पाना परम सौभाग्य है; असत् से सत् और अंधकार से प्रकाश की ओर गति करना ही साधना का मुख्य उद्देश्य है
—आचार्यश्री महाश्रमण

बन पाना और उसमें भी धर्म का मार्ग मिल जाना बहुत सौभाग्य की बात होती है। जो जीव चरित्र रत्न को प्राप्त कर लेता है, वह मानो धन्य हो जाता है। निर्जरा का अंतिम लक्ष्य मोक्ष ही है। जब तक जीव प्रवृत्ति में रहेगा, तब तक मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो सकती। अच्छी प्रवृत्ति आदमी को निवृत्ति की ओर ले जाने वाली हो सकती है।

२. तात्त्विक भाषा के ३ शब्द (अशुभ योग, शुभ योग और अयोग) : तात्त्विक भाषा में तीन शब्द महत्वपूर्ण हैं—अशुभ योग, शुभ योग और अयोग। अयोग तक सीधे जाना मुश्किल है। पहले अशुभ योग से शुभ योग में रहने का प्रयास करना चाहिए। आदमी को असत् से सत्, अंधकार से प्रकाश और मृत्यु से अमरत्व की ओर गति करने का प्रयास करना चाहिए।

संयम की चदर...

आचार्यश्री महाश्रमण जी ने साधक के संयम और साधना की तुलना एक बिल्कुल निर्मल एवं सफेद चदर से की।

विराधना के दो स्तर :

१. हल्की विराधना (रज/धूल का लगना) : यदि चदर पर मामूली सी धूल लग जाए, तो वह एक छोटी धूल या हल्की विराधना का प्रतीक है।
२. बड़ी विराधना (कीचड़ में गिरना) : यदि वही सफेद चदर पूरी तरह से कीचड़ में गिर जाए, तो वह अत्यंत गंभीर धूल यानी बड़ी विराधना है।

दृष्टांत का मुख्य संदेश :

१. भूलों के स्तर को पहचानें : प्रत्येक विराधना (दोष/धूल) का स्तर एक समान नहीं होता; कुछ छोटी होती हैं और कुछ अत्यंत गंभीर।
२. सदा सतर्क रहें : साधक को हर प्रकार की सूक्ष्म और स्थूल विराधना से बचने का निरंतर प्रयास करना चाहिए।
३. तत्काल 'आलोचना' (प्रायश्चित्त) : यदि अनजाने में कोई छोटी धूल या दोष लग भी जाए, तो उसे तुरंत आलोचना/प्रायश्चित्त के माध्यम से साफ कर लेना चाहिए, ताकि संयम की चदर पर कोई स्थायी दाग न लगे।

३. शुभ योग में निर्जरा : शुभ योग में रहने से भी कर्मों की निर्जरा होती है। अतः व्यवदान के द्वारा जीव अक्रिया को प्राप्त करता है। इस जन्म में भले ही हम पूर्ण अक्रिया की आशा न रखें, परन्तु जितनी उपयुक्त है उतनी अक्रिया को प्राप्त करने का प्रयास करें। अशुभ योग की दृष्टि से हम अक्रिय रहें और जितना संभव हो सके शुभ योग में रहने का प्रयास करना चाहिए।

"नशामुक्त युवा फॉर विकसित भारत" विषय पर प्रेरणादायी कार्यक्रम का आयोजन

गुवाहाटी।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी के विद्वान सुशिष्य मुनि आनंद कुमारजी 'कालू' एवं सहवर्ती मुनि विकास कुमारजी के सान्निध्य एवं अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्वावधान में नशामुक्त युवा फॉर विकसित भारत' विषय पर प्रेरणादायी कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इसके पश्चात् अणुव्रत आचार्य संहिता का वाचन अणुविभा के असम त्रिपुरा राज्य प्रभारी छत्तर सिंह चौरडिया ने किया। अध्यक्षीय वक्तव्य में संजय चौरडिया ने सभी का स्वागत करते हुए कार्यक्रम की जानकारी दी एवं युवाओं को नशामुक्त जीवन अपनाकर राष्ट्र निर्माण में सहभागी बनने का आह्वान किया।

अपने प्रेरणाप्रद उद्बोधन में मुनि आनंद कुमारजी 'कालू' ने कहा कि विकसित भारत का सशक्त आधार चरित्रवान एवं

नशामुक्त युवा हैं। इसके उपरान्त मुनिश्री ने महाप्राण ध्वनि का प्रयोग कराया, जिससे उपस्थित जनों ने मानसिक शांति एवं सकारात्मक ऊर्जा का अनुभव किया। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित सभी लोगों ने माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के 'नशामुक्त भारत अभियान' के लाइव संबोधन का सामूहिक श्रवण किया।

संबोधन के पश्चात सभी प्रतिभागियों ने नशामुक्त भारत की शपथ ग्रहण कर स्वयं नशामुक्त रहने तथा समाज को भी इस दिशा में जागरूक करने का संकल्प लिया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में स्थानीय वार्ड पार्षद प्रमोद स्वामी तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में आईपीएस शाम्भवी मिश्रा (डिप्टी कमिशनर ऑफ पुलिस, सेंट्रल गुवाहाटी) संयोजक आनन्द सुराणा ने आभार ज्ञापन किया।

सूट-बूट नहीं, रजोहरण हाथ में

कटक।

भारतीय संस्कृति के उत्थान में सन्त महात्माओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वर्तमान युग में इस संत संस्कृति संवर्धन के सोद्देश्य तेरापंथ भवन, कटक में मुनि मोहजीतकुमार जी ठाणा 3 के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में तेरापंथ किशोर मंडल, कटक द्वारा A Day Like Monk का अनुष्ठान आयोजन हुआ। जिसमें 27 सदस्यों ने भाग लेकर अपने आप को साधुचर्या से सम्बद्ध किया। प्रातःकाल सूर्योदय के साथ ही मुनि मोहजीतकुमार जी ने सभी साधकों को साधना की उपसम्पदाओं से संकल्पित करवाया। सभी साधक मुनि वेशभूषा में रहे। साधक संरक्षक अशोक बरलोटा ने संभागी साधकों को रजोहरण प्रदान किया। मुनि जयेशकुमार जी ने भगवान महावीर द्वारा उल्लेखित साधुचर्या की तरह सभी साधकों को पूर्ण जागरूकता के साथ पूरा

दिन बिताने की प्रेरणा दी। उसके पश्चात मुनि भव्य कुमार जी ने 7 साधक लीडरों की नियुक्ति कर उनके साथ अन्य साधकों का नियोजन किया, वे सभी साधक लीडरों के दिशानिर्देश में संलग्न रहे। मुख्य प्रवचन में मुनि मोहजीतकुमार जी ने कहा कि साधना के प्रति अंतर का भाव जागृत होने पर साधना फलीभूत हो जाती है। संभागी

A Day Like Monk कार्यशाला

साधकों के साथ सब उपस्थित श्रावक समाज को विशेष पाठ्य प्रदान करते हुए, मुनिवर ने कहा कि हमारी देव, गुरु, धर्म के प्रति श्रद्धा सघन हो, आस्था अटूट होने पर हम परम की प्राप्ति कर सकते हैं। इस अवसर पर मुनि जयेश कुमार जी ने कहा संकल्पों से परिपूर्ण बनने से साधना शिखर चढ़ती है। आपकी की यह साधना एक दिन की ही नहीं, अपितु जीवन भर की बने। हर प्रवृत्ति में सजग रहे। वीतरागता की दिशा

में आगे बढ़े। साधना का सत्व बढ़ता रहे। मध्याह्न में मुनि मोहजीतकुमार जी के केश लुंछन का दृश्य सभी साधकों ने अपनी आँखों से निहारा। संध्या गुरु वन्दना, प्रतिक्रमण, अर्हंत वंदना के पश्चात A Journey of Being Monk (Part 2) उपक्रम में मुनि जयेशकुमार जी ने अपने दीक्षा पश्चात साधना यात्रा का वृत्तांत सुनाया। पावरप्वॉइंट प्रेजेंटेशन में चित्र, वीडियो के साथ उनकी यात्रा को देखकर पूरी जनमेदिनी भाव विभोर हो गई। रात्रि में साधकों ने अनुष्ठान आत्मनिरीक्षण, आत्मदर्शन के प्रयोग करने के पश्चात शयन किया।

प्रातःकाल बहम मुहूर्त में सभी ने रात्रिक प्रतिक्रमण कर गुरु वन्दना की। प्रतिलेखन के पश्चात सूर्योदय के समय मुनिप्रवर ने मंगल पाठ के साथ साधना परिसम्पन्नता की घोषणा की। इस साधना क्रम में किशोर मंडल व युवक परिषद के अनेक कार्यकर्ताओं का विशेष योगदान रहा।

TPF का 19वां राष्ट्रीय अधिवेशन : लाडनू

'हो हमारा योगक्षेम' थीम पर जुटे देशभर से 625 से अधिक प्रोफेशनल्स

लाडनू।

प्रथम दिन -

पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य एवं मंगल आशीर्वाद से तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम (टीपीएफ) के त्रिदिवसीय 19वें राष्ट्रीय अधिवेशन 'हो हमारा योगक्षेम' का शुभारंभ जैन विश्व भारती, लाडनू में हुआ। अधिवेशन में देशभर की टीपीएफ शाखाओं से लगभग 625 प्रोफेशनल्स सहभागिता कर रहे हैं। प्रथम दिन आध्यात्मिक मार्गदर्शन, संगठनात्मक उपलब्धियों, वार्षिक साधारण सभा एवं नई राष्ट्रीय टीम के निर्वाचन सहित विभिन्न कार्यक्रम हुए। प्रथम दिन वर्ष 2026 का प्रतिष्ठित 'टीपीएफ गौरव' सम्मान सूर्यप्रकाश श्यामसुखा (गंगाशहर-लुधियाना) को पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में प्रदान किया गया। सम्मान स्वीकार करते हुए श्यामसुखा ने इसे आचार्यश्री के चरणों में समर्पित किया। टीपीएफ राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत माण्डोट, चीफ ट्रस्टी एस.के. सिंधी, महामंत्री मनीष कोठारी सहित पदाधिकारियों ने युवाचार्य श्री महावीर कुमारजी के दर्शन-वंदन एवं सेवा का लाभ लिया। टीपीएफ टीम ने आचार्यश्री महाश्रमणजी के दर्शन-वंदन एवं सेवा का लाभ लिया। राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत माण्डोट ने फोरम की विगत दो वर्षों की गतिविधियों एवं उपलब्धियों का विवरण प्रस्तुत किया। शिक्षा क्षेत्र में आचार्य महाप्रज्ञ शिक्षा सहयोग योजना के माध्यम से प्रतिवर्ष 4.5 से 5 करोड़ रुपए की छात्रवृत्ति एवं फीस सहायता दी जा रही है तथा 13 नॉलेज सेंटर युवाओं को कोचिंग के माध्यम से आगे बढ़ा रहे हैं। उन्होंने बताया कि 'मिशन दृष्टि' के तहत करीब 1.40 लाख बच्चों की नेत्र जांच की गई है और अहमदाबाद में चिकित्सा एवं नेत्र सेवा प्रकल्प विकसित किया जा रहा है। दो वर्षों में टीपीएफ का कॉर्पस फंड 13.5 करोड़ से बढ़कर करीब 20 करोड़ तथा एफडी 3 करोड़ से बढ़कर 7.5 करोड़ रुपए हुई है। विभिन्न प्रकल्पों के लिए करीब 24 करोड़ रुपए के डोनर कमिटमेंट एवं लगभग 5 करोड़ रुपए का सीएसआर सहयोग प्राप्त हुआ है। टीपीएफ की 17वीं वार्षिक साधारण सभा राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत माण्डोट की अध्यक्षता में महाश्रमण ऑडिटोरियम, विमल विद्या विहार, जैन विश्व भारती में आयोजित हुई। महामंत्री मनीष कोठारी ने वर्षभर की आध्यात्मिक, शैक्षणिक, स्वास्थ्य, प्रोफेशनल डेवलपमेंट एवं सेवा गतिविधियों का विवरण प्रस्तुत किया।

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष नरेश कठोटिया ने वार्षिक आय-व्यय का ब्यौरा सदन के समक्ष रखा। सत्र 2026-28 के लिए पुष्प जैन (मोमासर-नई दिल्ली) को टीपीएफ का राष्ट्रीय अध्यक्ष तथा प्रकाश बैद (लाडनू-कोलकाता) को चीफ ट्रस्टी निर्वाचित किया गया। नवनिर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पुष्प जैन ने सभी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि पूर्व अध्यक्षों एवं टीमों द्वारा तैयार की गई मजबूत नींव को आगे बढ़ाना उनकी प्राथमिकता होगी। नवनिर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष पुष्प जैन एवं चीफ ट्रस्टी प्रकाश बैद ने टीपीएफ के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक डॉ. मुनि रजनीश कुमारजी के दर्शन-वंदन कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

द्वितीय दिवस-

आचार्यश्री महाश्रमणजी ने लक्ष्य निर्धारण का महत्व बताते हुए कहा कि जीवन में सर्वोच्च लक्ष्य के साथ छोटे-छोटे उपलक्ष्य भी निर्धारित होने चाहिए। धार्मिक जीवन में मोक्ष परम लक्ष्य है, जबकि तपस्या, साधना, स्वाध्याय एवं मौन जैसे लक्ष्य उसकी दिशा में आगे बढ़ने के साधन हैं। उन्होंने कहा कि 'अप्राप्तस्य प्रापणं योगः, प्राप्तस्य रक्षणं क्षेमः'—जो प्राप्त नहीं है उसे प्राप्त करना योग और जो प्राप्त है उसकी रक्षा करना क्षेम है। आचार्यश्री ने टीपीएफ को तेरापंथ समाज के शिक्षित एवं विशेषज्ञ प्रोफेशनल्स को धर्म से जोड़ने वाला महत्वपूर्ण मंच बताते हुए कहा कि डॉक्टर, वकील, इंजीनियर, सीए सहित विभिन्न क्षेत्रों के प्रोफेशनल्स अपने व्यस्त समय में से समय निकालकर सेवा करते हैं और जैन धर्म, तेरापंथ दर्शन एवं प्रेक्षाध्यान का अध्ययन करते हैं, यह सराहनीय है। उन्होंने नई टीम को धार्मिक, आध्यात्मिक एवं सेवा कार्यों को निरंतर आगे बढ़ाने की प्रेरणा दी। अधिवेशन के द्वितीय दिवस आचार्यश्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में मैनेजिंग एडिटर, जी न्यूज अनिल सिंघवी को 'आचार्य महाश्रमण प्रोफेशनल ऑफ द ईयर अवार्ड 2026' से सम्मानित किया गया। अवार्ड की घोषणा निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज ओस्तवाल ने की। नरेश कठोटिया ने उनका परिचय प्रस्तुत किया तथा निर्मल कोटेचा ने सम्मान-पत्र का वाचन किया। सम्मान के बाद अनिल सिंघवी ने टीपीएफ से अपने विशेष जुड़ाव का उल्लेख करते हुए कहा कि प्रोफेशनल डिग्री प्राप्त करना 'योग' है, जबकि तेरापंथ धर्मसंघ में जन्म लेकर मिले संस्कारों, विरासत एवं मूल्यों की रक्षा करना 'क्षेम' है। मुनि रजनीश कुमारजी के सान्निध्य में आयोजित प्रथम सत्र में संगठन की कार्यप्रणाली एवं भविष्य

की दिशा पर मंथन हुआ। मुनिश्री ने कहा कि किसी भी संगठन की वास्तविक ताकत उसके कार्यकर्ता होते हैं और कार्यकर्ताओं से ही मजबूत पदाधिकारी तैयार होते हैं। उन्होंने 'टारगेट तय करें' विषय पर कहा कि संगठन के भविष्य के लक्ष्य कार्यकर्ताओं एवं सदस्य संख्या को ध्यान में रखकर तय होने चाहिए। उन्होंने टीपीएफ के करीब 11,500 सदस्यों का उल्लेख करते हुए बड़े लक्ष्य के साथ सामूहिक प्रयास करने का आह्वान किया। विगत दो वर्षों में टीपीएफ की गतिविधियों की सराहना करते हुए उन्होंने पूरी टीम का उत्साहवर्धन किया। नवनिर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष पुष्प जैन ने आगामी कार्यकाल का विजन प्रस्तुत करते हुए थीम 'Evolve,

नई कार्यकारिणी ने
ली शपथ

'मिशन दृष्टि' की नई
एंबुलेंस का लोकार्पण

Scale and Serve' घोषित की। संगठन के विस्तार के लिए 'अबकी बार 15,000 पार' का लक्ष्य रखा गया। उन्होंने कहा कि सदस्य संख्या बढ़ाने के साथ नए सदस्यों को टीपीएफ की कार्यप्रणाली एवं सेवा गतिविधियों से सक्रिय रूप से जोड़ना प्राथमिकता होगी। द्वितीय सत्र में टीपीएफ गौरव सम्मानित सूर्यप्रकाश श्यामसुखा ने 'तेरापंथ मेरा पंथ' विषय पर विचार रखते हुए कहा कि केवल धार्मिक ज्ञान प्राप्त करना पर्याप्त नहीं, बल्कि उसे आचरण में उतारना आवश्यक है। उन्होंने आचार्य भिक्षु के दर्शन एवं सिद्धांतों की चर्चा करते हुए साध्य और साधन की शुद्धता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि त्याग, अहिंसा एवं संयम धर्म के आधार हैं तथा राग-द्वेष से ऊपर उठकर वीतरागता की दिशा में बढ़ना ही आत्मकल्याण का मार्ग है। साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी ने आध्यात्मिक विकास के साथ प्रोफेशनल्स को धर्म प्रभावना का दिया संदेश। तीसरे सत्र में साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशाजी ने कहा कि जीवन में श्रद्धा अखंड एवं दृढ़ होनी चाहिए। उन्होंने टीपीएफ की सेवा भावना एवं मजबूत नेटवर्किंग की सराहना करते हुए प्रोफेशनल जीवन में भावनात्मक मूल्यों की महत्ता बताई। उन्होंने क्रोध, अहंकार, माया एवं लोभ जैसे नकारात्मक भावों पर नियंत्रण रखते हुए सकारात्मक एवं संतुलित व्यवहार की प्रेरणा दी। साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी ने कहा कि केवल व्यावसायिक सफलता पर्याप्त नहीं,

बल्कि आध्यात्मिक क्षेत्र में भी शिखर तक पहुंचने का प्रयास होना चाहिए। आत्म-दर्शन, अंतर्मुखी चिंतन, अहिंसा, अपरिग्रह एवं अनेकांतवाद जैसे सिद्धांतों को जीवन में उतारने की प्रेरणा देते हुए उन्होंने प्रेक्षाध्यान को सजगता, एकाग्रता एवं निर्णय क्षमता बढ़ाने का माध्यम बताया। उन्होंने टीपीएफ के नए नेतृत्व से आगामी दस वर्षों में ऐसे प्रोफेशनल्स तैयार करने का लक्ष्य रखने का सुझाव दिया, जो जैन दर्शन, तेरापंथ एवं प्रेक्षाध्यान के विशेषज्ञ बनकर देश-विदेश में संघ की प्रभावना में योगदान दे सकें।

पांचवें सत्र में अनिल सिंघवी के साथ 'इंडिया ग्रोथ स्टोरी' विषय पर संवाद हुआ। पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष नवीन पारख ने विभिन्न सवाल पूछे, जिनका सिंघवी ने सहज एवं व्यावहारिक तरीके से जवाब दिया। उन्होंने कहा कि डिग्री केवल आधार देती है, लेकिन प्रोफेशनल को जीवनभर अपने ज्ञान को अपडेट करते रहना चाहिए। उन्होंने मेहनत, निरंतर सीखने, धैर्य एवं सही रिसर्च को सफलता का आधार बताया।

तृतीय दिवस-

देशभर से आए टीपीएफ सदस्यों ने 'गाइडेड टूर-जेवीबी कैम्पस' एवं उत्साहपूर्ण रैली में सहभागिता की। अंतिम दिन नई राष्ट्रीय कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण, मिशन दृष्टि एंबुलेंस का लोकार्पण, आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं सम्मान समारोह प्रमुख आकर्षण रहे। आचार्यश्री के सान्निध्य में टीपीएफ के 'मिशन दृष्टि' प्रकल्प के तहत नई एंबुलेंस का लोकार्पण हुआ। निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री हिम्मत माण्डोट ने बताया कि मिशन दृष्टि के माध्यम से पिछले वर्ष करीब 1.30 लाख और इस वर्ष करीब 1.40 लाख बच्चों की नेत्र जांच की गई। नेत्र जांच मशीन बनाने वाली कंपनी अप्पासामी एसोसिएट्स द्वारा टीपीएफ को दो वाहन भेंट किए गए हैं। नई एंबुलेंस में स्लिट लैंप सहित आवश्यक उपकरण उपलब्ध हैं, जिससे गांवों, स्कूलों एवं संकरी गलियों तक पहुंचकर नेत्र जांच शिविर लगाए जा सकेंगे। आचार्यश्री ने सेवा कार्य की सराहना करते हुए कहा कि प्रोफेशनल्स अपनी विशेषज्ञता, संपर्क एवं बुद्धि का उपयोग धर्मसंघ एवं सेवा कार्यों में कर रहे हैं। युवाचार्य श्री महावीर कुमारजी ने टीपीएफ के लिए T-P-F का भावपूर्ण अर्थ बताते हुए कहा कि T-Transcendence के माध्यम से अपनी कमजोरियों एवं कषायों से ऊपर उठकर विनम्रता, संयम एवं सहिष्णुता अपनाएं। P-Progress के माध्यम से सही दिशा में व्यावसायिक विकास के

साथ आध्यात्मिक उन्नति करें और F-Fellowship के माध्यम से पारस्परिक सहयोग, सद्भाव एवं संगठन की शक्ति को मजबूत बनाएं। अधिवेशन के दौरान टीपीएफ के वर्ष 2026-28 के लिए नवनिर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष पुष्प जैन के नेतृत्व में नई राष्ट्रीय कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह हुआ। निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत माण्डोट ने नवनिर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष, चीफ ट्रस्टी एवं उनकी टीम तथा अर्बिट्रेटर को पद एवं दायित्व की शपथ दिलाई। नई टीम में राष्ट्रीय अध्यक्ष पुष्प जैन, निवर्तमान अध्यक्ष हिम्मत माण्डोट, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मनीष कोठारी, नरेश कठोटिया, सुनील बोहरा, विजय कुमार नाहटा, मनोज नाहटा एवं दिनेश धोका शामिल हैं। राष्ट्रीय महामंत्री नवीन चोरडिया, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष सुरेन्द्र चोरडिया तथा राष्ट्रीय सहमंत्री मोहित बैद, राजेश कुमार जैन, अभिषेक जैन एवं विक्रम कोठारी को दायित्व सौंपा गया। सह कोषाध्यक्ष के रूप में दीपक कुचेरिया एवं विकास हिरण को जिम्मेदारी दी गई। छठे सत्र में मुनि श्री कुमारश्रमणजी ने 'करो योगक्षेम स्वयं का' विषय पर कहा कि टीपीएफ के 19 वर्ष पूर्ण होना संस्था की परिपक्वता का संकेत है।

प्रत्येक सदस्य को आत्ममंथन करना चाहिए कि 'हमारा संघ, हमारा दायित्व' की भावना से वह धर्मसंघ के लिए क्या योगदान दे रहा है। उन्होंने कहा कि टीपीएफ केवल प्रोफेशनल नेटवर्किंग का मंच नहीं, बल्कि आध्यात्मिकता एवं तेरापंथ के मूल्यों को जीवन में उतारने का माध्यम है। उन्होंने कहा कि योगक्षेम का अर्थ केवल नई उपलब्धियां प्राप्त करना नहीं, बल्कि मूल्यों, स्वास्थ्य, मानसिक शांति एवं पारिवारिक संबंधों का संरक्षण भी है। सेवा के लिए केवल आर्थिक सहयोग आवश्यक नहीं, बल्कि व्यक्ति अपनी विशेषज्ञता एवं क्षमता के अनुसार भी योगदान दे सकता है।

उन्होंने सदस्यों को प्रतिदिन आत्ममंथन करने की प्रेरणा दी कि 'आज मैंने तेरापंथ धर्मसंघ के लिए क्या किया?' मुनिश्री ने मोबाइल एवं एआई के संतुलित उपयोग की सलाह देते हुए कहा कि तकनीक सुविधा के लिए है, उसे जीवन पर हावी नहीं होने देना चाहिए। भोजन, ड्राइविंग एवं पारिवारिक समय में मोबाइल से दूरी तथा रात में निश्चित समय के बाद डिजिटल कट-ऑफ रखने की प्रेरणा दी।

समापन अवसर पर वर्ष 2025-26 में विभिन्न शाखाओं एवं कार्यकर्ताओं द्वारा किए गए उत्कृष्ट कार्यों के लिए सम्मान प्रदान किए गए।

प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन

टोहाना।

प्रेक्षा फाउंडेशन के निर्देश अनुसार तथा प्रेक्षा वाहिनी टोहाना संवाहिका उषा जैन के निर्देशन में आज स्थानीय तेरापंथ भवन में सितंबर मास की प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 6 साधकों ने प्रतिभागिता की। इसके पश्चात प्रेक्षाध्यान भिन्न-भिन्न प्रयोग अनुप्रेक्षा, कायोत्सर्ग, लेश्याध्यान तथा दीर्घश्वास प्रेक्षा के कई प्रयोग किए गए। इसके पश्चात प्रेक्षा प्रणेता आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के रिकॉर्डड प्रवचनों का श्रवण किया गया। प्रेक्षाध्यान से मनोबल

एवं संकल्प बल में वृद्धि होती है जिसके कारण मनुष्य आत्मा पर नियंत्रण कर सकता है। प्रेक्षाध्यान से आत्मा के द्वारा आत्मा का अवलोकन किया जा सकता है। जिस प्रकार दर्पण में व्यक्ति अपना चेहरा देखा है।

प्रेक्षाध्यान से आत्मा का दर्शन कर सकता है। प्रेक्षाध्यान से मानसिक संतुलन, मानसिक जागृति और चित समाधि का विकास होता है तथा आधि व्याधि और उपाधि का क्षय होता है। कार्यक्रम में प्रेक्षावाहिनी संवाहिका उषा जैन, श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के निवर्तमान मंत्री सुभाष जैन आदि उपस्थित रहे।

भक्तामर स्तोत्र सभी स्तोत्रों में सर्वश्रेष्ठ

कृष्णानगर, दिल्ली।

डॉ. मुनि अभिजीत कुमार जी व मुनि जागृत कुमार जी के पावन सान्निध्य में आयोजित भक्तामर अनुष्ठान अत्यंत ही आध्यात्मिक व दिव्य वातावरण में संपन्न हुआ। तेयुप गांधीनगर दिल्ली के कर्मठ अध्यक्ष प्रकाश सुराणा ने पधारें हुए सभी पदाधिकारियों का व अनुष्ठान में उपस्थित श्रावक श्राविका समाज का अपने व्यक्तव्य से स्वागत व अभिनंदन किया। डॉ. मुनि अभिजीत कुमार जी ने श्रावक श्राविका समाज को भक्तामर का महत्व बताते हुए फरमाया की आचार्यमानतुंग द्वारा रचित यह

स्त्रोत सभी स्त्रोतों में सर्वश्रेष्ठ माना गया है। श्वेतांबर और दिगंबर दोनों परंपराओं में इसका बहुत महत्व है इसका एक एक श्लोक मंत्र से ओतःप्रेत व बहुत ही चमत्कारी है। भक्तामर स्त्रोत की रचनाकाल सातवीं शताब्दी के लगभग है श्वेतांबर परंपरा में 44 व दिगंबर परंपरा में 48 श्लोकों की मान्यता है। मुनि जागृत कुमार जी ने अपने उद्बोधन में भक्तामर के गूढ़ रहस्यों का चित्र सहित अर्थ व मार्मिक विवेचन करते हुए सभी श्रावक श्राविका समाज को आत्मजागृति का संदेश दिया। डॉ.मुनि अभिजीत कुमार जी व मुनि जागृत कुमार जी के मुखारबिंद से अनुष्ठान सम्पन्न हुआ।

निर्ग्रंथ दर्शन मोक्ष की राह को प्रशस्त करता है

कटक।

भारतवर्ष में निर्ग्रंथ दर्शन की परंपरा अत्यंत प्राचीन रही है। यह दर्शन जीवन का महान आधार होने के साथ-साथ युगानुकूल चिंतन एवं जीवन-दृष्टि प्रदान करता रहा है। मध्यकाल में निर्ग्रंथ दर्शन का अस्तित्व कुछ क्षीण अवश्य हुआ, किंतु वर्तमान समय में भी यह दर्शन जीवन को सही दिशा देने वाला महत्वपूर्ण मार्गदर्शक बना हुआ है। निर्ग्रंथ दर्शन के मौलिक सिद्धांतों को वर्तमान युग के संदर्भ में समझने और जनमानस तक पहुंचाने के उद्देश्य से कटक प्रवासित युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि मोहजीत कुमारजी के सान्निध्य में निर्ग्रंथ दर्शन कार्यशाला - 2026 का आयोजन किया गया। कार्यशाला के मुख्य अभिभाषक मुनि जयेश कुमारजी ने अतीत, वर्तमान एवं भविष्य से जुड़े विभिन्न विषयों पर प्रभावशाली एवं बेबाक प्रस्तुति देते हुए निर्ग्रंथ दर्शन की प्रासंगिकता को रेखांकित किया। उन्होंने जैन दर्शन, तेरापंथ दर्शन, मंत्र

शक्ति, जीवनशैली एवं इतिहास जैसे विविध विषयों पर प्रतिभागियों का मार्गदर्शन किया। कार्यशाला के अंतिम दिन आयोजित मंथन समारोह में मुनि जयेश कुमारजी ने कहा कि निर्ग्रंथ दर्शन भौतिकता से आध्यात्मिकता की ओर बढ़ने का अंतर्दर्शन है। यही दर्शन हमारी भावधारा को परिष्कृत कर मोक्ष की राह को प्रशस्त करता है। उन्होंने सभी प्रतिभागियों से आह्वान किया कि कार्यशाला के दौरान प्राप्त बोधि के माध्यम से वे अपने भीतर की ग्रंथियों को पहचानने और उन्हें परिष्कृत करने का निरंतर प्रयास करें। मुनिश्री ने कार्यशाला में किशोरों एवं कन्याओं की निरंतर एवं उत्साहपूर्ण उपस्थिति पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि युवा पीढ़ी का इस प्रकार धर्मसंघ से जुड़ना संघ के उज्ज्वल भविष्य का शुभ संकेत है। तेयुप अध्यक्ष शशि चोरडिया, किशोर मंडल प्रभारी वैभव सेठिया, कन्या मंडल संयोजिका उर्वशी चोपड़ा एवं रिया पारख ने कार्यशाला से जुड़े अनुभव साझा किए। आयोजन एवं व्यवस्थापन में हर्ष चोपड़ा, सौरव दुग्गड़ का योगदान रहा।

निर्ग्रंथ दर्शन कार्यशाला



संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन

जैन विधि-अमूल्य निधि



नूतन प्रतिष्ठान

■ **सूरत।** लावा (सरदारगढ़) निवासी सूरत प्रवासी सुनील गाँधी के सुपुत्र देव गाँधी के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारम्भ जैन संस्कार विधि से संस्कारक मनीष कुमार मालू ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

तप सम्पूर्ति

■ **सूरत।** सांडवा निवासी सूरत प्रवासी रंजीत भंसाली के 30 की तपस्या का तप अनुष्ठान संपूर्ति जैन संस्कार विधि से संस्कारक, विजयकांत खटेड, धर्मचंद सामसुखा ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

गृह प्रवेश

■ **सूरत।** उदासर निवासी सूरत प्रवासी भिखम चन्द रामपुरिया का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयकांत खटेड, अभय बोथरा ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

आचार्य श्री महाप्रज्ञजी की कृपा से प्रारंभ हुआ विकास महोत्सव

● मुनि कमलकुमार ●

तेरापंथ धर्मसंघ उदितोदित धर्मसंघ है। आचार्य भिक्षु ने मर्यादावली में अनेकांत सिद्धांत का उपयोग किया। उन्होंने एकधारा ऐसी बनाई जिससे प्रत्येक आचार्य ने अपनी सूझ-बूझ का उपयोग कर धर्मसंघ को युगानुकूल बनाने का प्रयास किया। वह धारा है—'मैंने वर्तमान समय देखकर मर्यादाओं का निर्माण किया है। उत्तरवर्ती आचार्य इसमें परिवर्तन या संशोधन करें और नई मर्यादा का निर्माण करें।' उसे सब साधु-साध्वी सहर्ष स्वीकार करें। जयाचार्य ने संघ में तीन उत्सव प्रारंभ किये—चरमोत्सव, पट्टोत्सव, मर्यादा महोत्सव। आचार्य श्री तुलसी ने अपने युवाचार्य को आचार्य पद पर प्रतिष्ठित करके धर्मसंघ में स्वर्णिम इतिहास का सृजन किया। जब आचार्य श्री तुलसी का पट्टोत्सव आया और उसे मनाने की जब गुरुदेव ने मनाही की, क्योंकि पट्टोत्सव वर्तमान आचार्य का

ही मनाया जाता है, गुरुदेव ने फरमाया, 'मैंने आचार्य पद का विसर्जन कर दिया, पट्टोत्सव आचार्य महाप्रज्ञजी का मनाएँ।' उस समय आचार्य श्री महाप्रज्ञजी ने फरमाया कि हम इसे पट्टोत्सव नहीं, विकास महोत्सव के रूप में मनाएँगे, क्योंकि तेरापंथ का जो अभिनव विकास देख रहे हैं, इसमें गुरुदेव तुलसी का सुश्रम, दीर्घचिंतन और युगानुकूल समस्याओं का समाधान दिखाई दे रहा है। जैन-अजैन जिस श्रद्धा-भक्ति से सेवा, दर्शन, प्रवचन, उपासना आयामों से जुड़ा है, यह सब गुरुदेव के व्यापक चिंतन का ही प्रभाव है। अणुव्रत, ध्यान, जीवन विज्ञान के द्वारा व्यक्तित्व निर्माण का कार्य कर लोगों को व्यसनमुक्त, साधनायुक्त जीवन जीने की प्रेरणा दी—महिला मंडल, युवक परिषद, कन्यामंडल, किशोर मंडल, ज्ञानशाला आदि कार्यक्रम बनाकर समवयस्क

लोगों का विकास कर संघ समाज का व्यापक रूप बनाया। जैन संस्कार विधि के द्वारा लोगों को जैनत्व के संस्कारों से सुसज्जित किया। रुढ़ि-उन्मूलन के द्वारा घूँघट प्रथा, बाल विवाह, मृत्युभोज आदि पर विराम लगा। शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक कार्य हुआ, जिससे किशोर और युवा ही नहीं, कन्याओं और महिलाएं भी आज समाज में उच्च शिक्षा प्राप्त होने के कारण वक्तव्य लेखन में ही नहीं, प्रशासन में भी गतिमान बनी हैं। गुरुदेव ने केवल साधु-साध्वियों और श्रावक-श्राविकाओं का ही उत्थान, विकास नहीं किया, बल्कि अजैनों को भी सुख, शांति और आनंदमय जीवन जीने की कला सिखाई। इसलिए आप मानवता के मसीहा कहलाये। विकास महोत्सव पर यह कामना करते हैं कि गुरुदेव द्वारा प्रदत्त हर आयाम का जनता उपयोग करती रहे।

तेरापंथ युवक परिषद का शपथ ग्रहण समारोह

हनुमानगढ़ टाउन।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद की संगठन यात्रा के अंतर्गत राष्ट्रीय महामंत्री सौरभ पटावरी निवासी सूरत का आगमन हनुमानगढ़ टाउन में हुआ। तेरापंथ भवन हनुमानगढ़ टाउन में 'सार संभाल परिषदों की' कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

अभातेयुप के क्षेत्रीय प्रभारी सतीश पुगलिया ने संगठन के बारे में जानकारी दी व स्थानीय शाखा द्वारा किये जा रहे कार्यों की जानकारी महामंत्री को दी। राष्ट्रीय महामंत्री पटावरी ने अभातेयुप

के आयामों के बारे में बताते हुए कहा की अभातेयुप देश भर में 300 शाखाओं के 40000 युवाओं के माध्यम से MBDD जैसे रक्तदान का महत्वपूर्ण कार्य किया जा रहा है, इसके अलावा युवा वाहिनी से जुड़ के युवा साधु संतो की रास्ते की सेवा जैसे कार्यों में जुड़ रहा है, CPS जैसी कार्यशाला द्वारा अपना व्यक्तित्व विकास कर रहा है, राष्ट्रीय महामंत्री सौरभ पटावरी ने नये कार्यकाल हेतु अनुराग बाँटिया को अध्यक्ष के रूप में शपथ दिलाई। ततपश्चात् अनुराग बाँटिया ने अपनी नई गठित कार्यकारिणी उपाध्यक्ष

कमल बाँटिया सौरभ बैद, मंत्री जियेश बाँटिया, कोषाध्यक्ष ऋषभ पटावरी को शपथ दिलाई। शपथ का कार्यक्रम जैन संस्कार विधि से संस्कारक रोहित दुग्गड सम्पादित करवाया।

तेरापंथ सभा अध्यक्ष राजेन्द्र बैद ने भी संबोधित किया। अंत में रोहित दुग्गड द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया गया। कार्यक्रम में सभा अध्यक्ष राजेंद्र बैद, युवक परिषद के पूर्व अध्यक्ष मनोज बैद व गौरव बैद महिला मण्डल अध्यक्ष संतोष बाँटिया के नेतृत्व में मातृ शक्ति सम्मिलित हुई। मंच संचालन कमल बाँटिया ने किया।

संक्षिप्त खबर

कन्या मंडल का आत्मीय सेवा एवं सद्भावना कार्यक्रम

हैदराबाद। अखिल भारतीय तेरापंथ कन्या मंडल के निर्देशानुसार 'उपनिषद-2' के अंतर्गत तेरापंथ महिला मंडल हैदराबाद के तत्वावधान में तेरापंथ कन्या मंडल, हैदराबाद द्वारा "सेवा एवं सद्भावना" कार्यक्रम आयोजित किया गया। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 10 कन्याओं एवं 2 प्रभारियों ने आश्रम के 29 वृद्धजनों के साथ प्रेम और अपनत्व से समय बिताया। यह केवल सेवा नहीं, दो पीढ़ियों का स्नेहिल मिलन था—कन्याओं ने कुछ पल दिए, और बदले में जीवनभर याद रहने वाले आशीर्वाद पाए। कई कन्याएँ भावुक हुईं और वृद्धजनों के स्नेहिल आशीर्वाद से अभिभूत हुईं।

'आपके सवाल विशेषज्ञ के जवाब' कार्यक्रम का आयोजन

गुवाहाटी। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ महिला मंडल गुवाहाटी द्वारा महिला स्वास्थ्य कार्यशाला 'आपके सवाल विशेषज्ञ के जवाब' कार्यक्रम का आयोजन युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के विद्वान सुशिष्य मुनि आनंदकुमार जी 'कालू' एवं सहवर्ती मुनि विकास कुमार जी के पावन सान्निध्य में किया गया। इसमें प्रख्यात विशेषज्ञ डॉ. विजय नाहटा भी उपस्थिति थे। अध्यक्ष सुशीला मालू ने सभी का स्वागत अभिनंदन करते हुए कार्यशाला के उद्देश्य एवं उपयोगिता पर प्रकाश डाला। डॉ. विजय नाहटा ने महिलाओं को मेनोपॉज एवं कैंसर से संबंधित महत्वपूर्ण एवं उपयोगी जानकारी प्रदान की। उन्होंने महिलाओं को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहने तथा समय - समय पर जांच कराने की प्रेरणा दी। कार्यशाला के दौरान महिलाओं द्वारा पूछे गए विभिन्न प्रश्नों के विशेषज्ञ द्वारा सरल एवं संतोष जनक उत्तर दिए गए। साथ ही डॉ. नाहटा ने भी महिलाओं से प्रश्न पूछकर उनकी स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता को परखा। इस अवसर पर अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की विशेष आमंत्रित सदस्य शिखा बोथरा की गरिमामय उपस्थिति रही। कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री सुचित्रा छाजेड़ ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन युवती मंडल संयोजिका श्रीमती पूजा महनोत द्वारा किया गया। बहनों की सराहनीय उपस्थिति से कार्यशाला सफलतापूर्वक संपन्न हुई।

अणुव्रत क्रिएटिव कॉन्टेस्ट 2026 की जिला स्तरीय प्रतियोगिता आयोजित

लाडनूँ। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के निर्देशानुसार अणुव्रत समिति लाडनूँ के तत्वावधान में ACC-2026 की जिला स्तरीय प्रतियोगिता महाप्रज्ञ प्रोग्रेसिव स्कूल में आयोजित हुई। प्रतियोगिता का शुभारंभ गुरुदेव के मंगल आशीर्वाद एवं मंगल पाठ से हुआ। इसके पश्चात अणुव्रत गीत का संगान किया गया। अध्यक्ष शांतिलाल बैद ने स्वागत भाषण दिया। संगठन मंत्री नवीन नाहटा ने प्रतियोगिता के नियम बताए तथा जीवन विज्ञान प्रशिक्षक ने प्रतिभागियों को प्रतिज्ञा करवाई। ACC राज्य प्रभारी नवल किशोर मीणा ने प्रतियोगिता संबंधी नियमों की जानकारी दी। संयोजन एवं आभार मंत्री राज कोचर ने किया।

अभातेयुप पदाधिकारियों का ATDC अवलोकन

अमराईवाडी। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत एवं अरविंद मांडोत ने अमराईवाडी पधारकर ATDC (आचार्य तुलसी डायनोस्टिक सेंटर) का अवलोकन किया। पवनजी मांडोत ने अमराईवाडी परिषद के सेवा कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि छोटी परिषद द्वारा पिछले दस वर्षों से ATDC का सफल संचालन प्रेरणादायी है। उन्होंने परिषद को डेंटल क्लिनिक शुरू करने के लिए भी मार्गदर्शन दिया। ATDC का संचालन और कैसे सुचारू रूप से करें और किस तरह हम इसमें और भी आगे बढ़े उसके लिए उनका विशेष मार्गदर्शन रहा तथा डेंटल केयर का आयोजन किस रूप से करना है उसके बारे में विस्तृत जानकारी भी दी। ATDC टीम द्वारा बनाए गए डेंटल केयर की प्रोजेक्ट रिपोर्ट का भी अवलोकन किया। इस अवसर पर तेयुप अध्यक्ष सुनील चिप्पड़, मंत्री किरण दूगड़, समस्त युवा टीम की गरिमा में उपस्थिति रही।

सामायिक अनमोल निधि है

रोहिणी, दिल्ली।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा में युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या 'शासनश्री' साध्वी सुमनश्रीजी के सान्निध्य में 'शनिवार सामायिक का बार' सामूहिक सामायिक अनुष्ठान कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। करीब दो सौ (२००) श्रावक श्राविकाओं की बहुत बड़ी उपस्थिति में दिल्ली में पहली बार एक साथ सात से आठ शनिवार को सामायिक हुई। जिसमें पांच साल तक के बच्चों की भी सहभागिता रही। तेरापंथ प्रबोध के सह संगान के साथ कार्यक्रम

प्रारम्भ हुआ। 'शासनश्री' साध्वी सुमनश्री जी ने सामायिक की महत्ता पर बोलते हुए कहा कि- महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमणजी का यह महनीय उपहार तेरापंथ समाज के लिए वरदान सिद्ध हो गया है। सामायिक अमूल्य निधि है इसका किसी भी कीमत पर मूल्य नहीं चुकाया जा सकता। प्रतिदिन की एक सामायिक जीवन की खरी कमाई है यह समता की आय है जिससे आध्यात्मिक शक्ति का संचय होता रहता है। सामायिक काल में किए गये अनेक प्रयोगों से जीवन में रूपान्तरण घटित हो जाता है। आज के इस भौतिक प्रदान युग में आम आदमी

तनाव की चदर ओढ़कर सोता है। भय चिन्ता अवसाद में जिन्दगी के स्वर्णिम क्षण बीत जाते हैं। ऐसे वातावरण और अपसंस्कृति के साथे में पल रहे युवा और बच्चों का भविष्य क्या होगा कुछ कहा नहीं जाता। प्रतिदिन सामायिक और जप ध्यान न स्वाध्याय से नई ऊर्जा मिलती है ओर मनोबल आत्मबल पुष्ट बनता है। सामूहिक सामायिक से नह पीढ़ी को प्रेरणा मिलती है।

अल्फा तरंगे जागृत होती है और एक रक्षाकवच का घेरा बनता है। साध्वी मधुर लता ने सामायिक गीत सुनाते हुए ऐसा ही अनुष्ठान करने की प्रेरणा दी।

जैन विद्या से सम्यक्त्व पुष्ट होता है

राजराजेश्वरी नगर।

मुनि आकाश कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा राजराजेश्वरी नगर के तत्वावधान में जैन विद्या परीक्षा-2025 में उत्तीर्ण विद्यार्थियों का सम्मान एवं पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। मुनि श्री ने जैन विद्या का महत्व बताते हुए कहा कि जैन धर्म में ज्ञान का बहुत महत्व है आचार्य तुलसी ने इस महत्व को समझते हुए तेरापंथ श्रावक समाज को जैन विद्या प्रकल्प का अवदान दिया। श्रावक संबोध में आचार्य तुलसी ने कहा भी है 'फल उपासना का श्रवण, मिले श्रवण से ज्ञान। फिर विज्ञान विवेचना, उसे प्रत्याख्या' अर्थात् श्रमणों की उपासना करने से जो आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त होता है उससे श्रावक का विवेक जागृत होता है और तब वह प्रत्याख्या का महत्व समझकर पापकारी प्रवृत्तियों का परित्याग

विद्यार्थियों का सम्मान समारोह आयोजित

करता है जो मोक्ष के मार्ग का प्रथम सोपान है। मुनिश्री हितेन्द्र कुमार जी ने जैन विद्या के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि विद्यार्जन का असर आपके आचार-विचार पर पड़ता है। हमारा सम्यक्त्व पुष्ट होता है। सम्यक्त्व के पांचों लक्षण को विश्लेषित करते हुए कहा कि सिर्फ जैन कुल में जन्म लेने से ही हम जैनी नहीं बन जाते बल्कि हमारी श्रद्धा का केन्द्र बिन्दु देव-गुरु-धर्म होना चाहिए।

जैन विद्या राजराजेश्वरी नगर की सह केंद्र व्यवस्थापिका संगीता डागा ने स्थानीय केंद्र के परीक्षार्थियों की जानकारी दी। सभाध्यक्ष कमलसिंह दुगड़ ने अपने विचार प्रस्तुत किए। जैन विद्या प्रभारी सीमा छाजेड़ ने विचार व्यक्त किए।

अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2026 प्रतियोगिता संपन्न

रतनगढ़। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्वावधान में अणुव्रत समिति, रतनगढ़ द्वारा अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट (ACC) 2026 की जिला स्तरीय प्रतियोगिता संचियालाल बैद आदर्श विद्या मंदिर में सम्पन्न हुई। प्रतियोगिता संयोजक नरेन्द्र सांकृत्य ने बताया कि प्रतियोगिता के लिए जिले में पंजीकृत कुल 30 विद्यालयों के 142 छात्र - छात्राओं ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। ACC 2026 के राज्य प्रभारी नवल किशोर मीणा ने विजेता प्रतियोगियों को बधाई देते हुए कहा कि अगले माह नोखा में होने वाली राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर राष्ट्रीय प्रतियोगिता में भी अपना स्थान सुनिश्चित करें। जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष मोतीलाल तातेड़ ने सहभागी विद्यालयों के संस्थाप्रधानों का आभार प्रकट किया।

सात सुखों में पहला सुख है निरोगी काया

उत्तर हावड़ा।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में हेल्थ अवेयरनेस वर्कशॉप का आयोजन तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम उत्तर हावड़ा द्वारा योगक्षेम विहार के योगक्षेम सभागार में किया गया।

इस अवसर पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे। वर्कशॉप के मुख्य वक्ता फोर्टिस हॉस्पिटल के यूरोलॉजी विभाग के एच. ओ. डी. डॉ. पुस्कर श्याम चौधरी थे। इस अवसर पर उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा — सात सुखों में पहला सुख

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम हेल्थ अवेयरनेस वर्कशॉप

है निरोगी काया। शरीर स्वस्थ है तो साधना भी अच्छी होगी। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए उचित आहार, उचित श्रम, उचित नींद व उचित जागरण होना चाहिए। व्यक्ति का रहन-सहन, खान-पान, दिनचर्या व्यवस्थित होती है, शरीर स्वस्थ रहता है। शरीर के प्रति जागरूक रहना चाहिए। भोजन, भजन दोनों का मूल्य है। व्यक्ति भजन करता रहे तो जीवन उसका मूल्यवान बन जाएगा। मुनि ने आगे कहा — शरीर के नियमों के

प्रति जागरूक रहना चाहिए। इस अवसर पर मुख्य वक्ता डॉ. पुष्कर श्याम चौधरी ने यूरीन से संबंधित रोगों और उसके उपचारों पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए बेहतर व प्रभावी जीवन जीने के लिए जागरूक रहने व शीघ्र चिकित्सा कराने की सलाह दी। उन्होंने रोबोटिक सर्जरी की भी जानकारी प्रदान की व श्रोताओं की जिज्ञासाओं का भी समाधान किया।

स्वागत भाषण तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के अध्यक्ष रीतेश दुगड़ ने अतिथि परिचय एवं आभार मंत्री विवेक बांठिया ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद ने किया। अतिथियों का सम्मान किया गया।

युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी के वर्धापन पर विशेष

मनोनयन कर गुरु ने खोली गण तकदीर

● मुनि कमलकुमार ●

श्री युवाचार्य महावीर

मनोनयन कर गुरु ने - २

खोली गण तकदीर ॥ ध्रुप ॥

तात सवाई माता छगनी के जाये

कोचर कुल उजियारे, फैला सुयश समीर ॥ १ ॥

महाप्रज्ञ मुख दीक्षा, जसवल में पाई

समिति गुप्ति में तत्पर, अच्छी बनी नजीर ॥ २ ॥

महाश्रमण गुरुवर की, महर हुई भारी

धर्म संघ को उपहत, निर्मल तम तस्वीर ॥ ३ ॥

डाक्टर सरल नम्र हैं, आगम के ज्ञाता

श्रेष्ठ श्रुताराधक है, धीर वीर गम्भीर ॥ ४ ॥

भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी, बोधिविषय आया

आसाढ़ी तेरस दिन, मिले भाग्य से पीर ॥ ५ ॥

वर्धापन अवसर पर, शत-शत अभिनन्दन

करें कामना प्रतिपल, स्वस्थ रहे शरीर ॥ ६ ॥

(तर्ज : आरती)

उजले भविष्य की अभिवंदना

● मुनि कुमुद कुमार ●

आचार्य श्री भिक्षु का यह परम, पावन, पवित्र तेरापंथ धर्मसंघ। छोटे से केलवा में भाव दीक्षा से प्रारंभ हुआ आज दुनिया के अनेकों देशों में अपना अमिट आलेख लिख चुका है। धर्मसंघ के प्रत्येक आचार्यों ने अपनी साधना, समयज्ञता, प्रज्ञा, पुरुषार्थ, दूरदर्शी चिंतन, परम पवित्र आचार, सहज सरल व्यवहार, मानव-कल्याणकारी कार्य - अवदानों से धर्मसंघ को सागर सी गहराई एवं हिमालय सी ऊंचाई प्रदान की है।

भगवान महावीर के अहिंसा, अनेकांत, अपरिग्रह के सिद्धांत तथा युग की अपेक्षा के अनुसार अणुव्रत आंदोलन, जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान जैसे अवदान तथा साहित्य की यथार्थ धारा ने तेरापंथ का परचम सात समंदर पार तक लहराया है। हमारा सौभाग्य हमने आचार्य श्री तुलसी-आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की जोड़ी को देखा। आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी- आचार्य श्री महाश्रमणजी की जोड़ी को देखा। वर्तमान में आचार्य श्री महाश्रमणजी एवं युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी जोड़ी को दीर्घ काल तक देखते रहेंगे। हमने भगवान महावीर स्वामी गणधर गौतम स्वामी की जोड़ी को देखा या ना देखा ज्ञात नहीं। हमने

आचार्य श्री भिक्षु-युवाचार्य श्री भारमल जी की जोड़ी को देखा या ना देखा ज्ञात नहीं। ऐसा लगता है कि भगवान महावीर स्वामी- गणधर गौतम स्वामी, आचार्य श्री भिक्षु- युवाचार्य भारमल जी, के गुणों का प्रतिरूप आचार्य परम्परा से होते हुए वर्तमान आचार्य श्री महाश्रमणजी एवं युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी में देख रहे हैं। पांचवें आरे में चौथा आरे के परम पावन आचार्य प्रवर एवं युवाचार्य श्री को देख रहे हैं जिनका जीवन अपने आप में ही एक प्रेरक संदेश है।

आचार्य श्री महाश्रमणजी ने शुभ दिन, शुभ घड़ी, में शुभ भविष्य धर्मसंघ को देकर निश्चित कर दिया। न केवल उन्होंने अपना उत्तराधिकारी घोषित कर उत्तरदायित्व निभाया अपितु संघ एवं मानवजाति को एक अप्रतिम, अद्वितीय, व्यक्तित्व प्रदान किया। अपनी पारखी नजरों से परख कर तराश तराश कर जो अनमोल रत्न बनाया उसे संघ के मुकुट पर स्थापित किया है। जिसमें विनय समर्पण एवं ज्ञान की त्रिवेणी है। सहज सरल व्यवहार, पावन पवित्र आचरण, एवं आध्यात्मिकता से परिपूर्ण संस्कार है। उनकी निश्चल मुस्कान,

तेजस्विता युक्त आभामंडल को देखकर व्यक्ति परम आनन्द प्राप्त करता है। प्रभु महावीर का यह शासन आचार्य श्री महाश्रमणजी की सन्निधि, युवाचार्य महावीर कुमार जी के मार्गदर्शन, निर्देशन में हम सभी निश्चित होकर आत्मसाधना करते हुए स्वयं को गौरवान्वित महसूस करेंगे। आचार्य प्रवर एवं युवाचार्य प्रवर की जुगलजोड़ी में पुरुषार्थ, पापभूरता, अप्रमत्तता, आत्मनिष्ठा, संयमनिष्ठा, सर्वेन्द्रिय संयम, के साथ-साथ प्रेरणा, प्रोत्साहन, वात्सल्य भाव भी देख रहे हैं। ऐसे अजस्वी, तेजस्वी, तपस्वी, यशस्वी, मनस्वी शास्ता को पाकर यह तेरापंथ संघ प्रगति के पायदान पर चढ़ता रहे। भैक्षव शासन जिनशासन में अद्वितीय बना रहे। चतुर्विध धर्मसंघ की आध्यात्मिक साधना उज्ज्वल बनती रहे। आपकी व्यवहारशैली, चिंतनशैली, कार्यशैली से मानवजाति का कल्याण हो। मंगलकामना, शुभ भावना, तेरापंथ धर्मसंघ के उजले भविष्य के प्रति। आप स्वस्थ रहें, दीर्घायु हो। अनन्त अनन्त कृतज्ञता महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमणजी के प्रति। अनन्त अनन्त अभिवंदन, अभिनंदन युवाचार्य महावीर कुमार जी के प्रति।

युवाचार्य प्रवर अभिनंदन

● साध्वी कंचन प्रभा ●

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी का गौरवशाली महिमामंडित स्वर्णिम शासनकाल रहा है। जन-जन आचार्य पदरोहण के पश्चात् पूरे भारत की ऐतिहासिक यात्राएं की हैं। इन यात्राओं से न केवल तेरापंथ समाज बल्कि मानव मात्र को नशामुक्ति, प्रामाणिकता व सौहार्द का संदेश मिला है। हमारे धर्मसंघ में भी अनेक कीर्तिमान आपके द्वारा रचित हुए हैं, उनमें सबसे महान् धर्मसंघ का निश्चित करने वाला 'युवाचार्य प्रवर महावीर (कुमार) जी' का मनोनयन। भैक्षव शासन में अनुशासन व विनय का सर्वोपरि उत्कृष्ट उदाहरण, जो जीवन उत्कृष्ट बनाता है। मारवाड़ की धन्य धरा फलसूंड छोटा सा गाँव, जहाँ युवाचार्य प्रवर का वि. सं. २०४५ द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ला ५ को जन्म हुआ। धर्म संघ के साधु-साधवियों का विशेष प्रवास नहीं होने की वजह से धर्माधना का योग लगभग नहीं के बराबर रहा। फिर भी पूर्व जन्मों के पुण्य का योग-संयोग अच्छा था कि बहुत लघु वय में ही आप दीक्षा के लिए कटिबद्ध हो गए। परम पूज्य प्रेक्षा प्रणेता आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के मंगलमय आशीर्वाद से वि. सं. २०५८ फाल्गुन कृष्णा ५ तदनुसार सन् २००२, ३ मार्च जसोल गाँव में आप श्री को चारित्र्य रत्न उपलब्ध हुआ। माता-पिता - श्रीमती छगनी देवी कोचर व श्री सवाई सिंह जी कोचर अपने पुत्र-रत्न को आचार्य प्रवर के चरणों में सौंप अतिशय आनंद की अनुभूति कर रहे थे। दीक्षित होने के पश्चात् आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की आप पर विशेष वात्सल्य व कृपा-दृष्टि रही। आपकी प्रखर प्रतिभा थी कि संघीय सभी परीक्षाओं में आप प्रथम नम्बर पर आते। आगम स्वाध्याय में आपकी अभिरुचि श्लाघनीय रही जिसमें परम पूज्य आचार्य प्रवर ने आप श्री को 'बहुश्रुत श्रुताराधक' से अलंकृत किया। आपका रत्नाधिक सन्तों के प्रति विनय, सेवा भावना तथा श्रम निष्ठा संघ का उपहार है। रम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी ने आपका युवाचार्य पद पर मनोनयन कर धर्म संघ को निश्चित किया है।

अध्यात्म-जगत में एक नवीन युग-संभावना का उद्घाटन

● ललित गर्ग, नई दिल्ली ●

कुछ घटनाएं इतिहास में दर्ज होती हैं और कुछ घटनाएं इतिहास की दिशा बदलने की क्षमता रखती हैं। तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान आचार्य श्री महाश्रमणजी द्वारा मुख्य मुनि महावीर कुमार जी को अपने उत्तराधिकारी के रूप में युवाचार्य मनोनीत किया जाना ऐसी ही घटना है। आषाढ़ शुक्ला त्रयोदशी को लाडलू स्थित जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा परिसर में हुई यह घोषणा तेरापंथ की लगभग ढाई शताब्दी पुरानी आचार्य-परम्परा में एक नया अध्याय जोड़ने वाली है।

तेरापंथ में युवाचार्य का पद किसी राजनीतिक या प्रशासनिक उत्तराधिकार जैसा पद नहीं है। यहां नेतृत्व अधिकार से नहीं, आत्मानुशासन से अर्जित होता है; प्रतिष्ठा पद से नहीं, साधना से मिलती है; और उत्तराधिकार किसी वंश का नहीं, विचार, मर्यादा, तप और आध्यात्मिक संस्कारों की निरंतरता का होता है। आचार्य श्री महाश्रमण जी ने इसी स्वस्थ परम्परा का निर्वाह करते हुए मुनि महावीर कुमार जी को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया है। इसलिए यह प्रश्न अधिक महत्वपूर्ण है कि मुनि महावीर कुमार जी कौन हैं और उनके युवाचार्यत्व में भविष्य के अध्यात्म की कौन-सी संभावनाएं दिखाई देती हैं? मुनि महावीर कुमार जी का जीवन इस प्रश्न का उत्तर स्वयं देता है:

१. साधना और चिंतन का संगम : अल्पायु में दीक्षा ग्रहण करने से लेकर मुख्य मुनि जैसे महत्वपूर्ण दायित्व तक की उनकी यात्रा आत्मसंयम, स्वाध्याय, तप, अनुशासन और निरंतर आत्मपरिष्कार की यात्रा है। उनके व्यक्तित्व में आध्यात्मिक साधक की गंभीरता के साथ आधुनिक समय को समझने वाले चिंतक की

दृष्टि दिखाई देती है।

२. पर्यावरणीय दृष्टि पर शोध : आध्यात्मिक साधना को उन्होंने ज्ञान से अलग नहीं माना। जैन आगमों में पर्यावरणीय चिंतन पर उनके शोध के लिए उन्हें पीएचडी उपाधि प्राप्त हुई है। दुनिया आज जलवायु संकट, हिंसा और असीमित उपभोग की संस्कृति से जूझ रही है। ऐसे में जैन दर्शन का अपरिग्रह, संयम, अहिंसा और सह-अस्तित्व का संदेश केवल धार्मिक सिद्धांत नहीं, बल्कि मानवता के अस्तित्व का प्रश्न बन जाता है।

३. जीवंत अध्यात्म का संदेश : युवाचार्य महावीर कुमार की भूमिका इसी संदर्भ में महत्वपूर्ण हो जाती है। उनका व्यक्तित्व विश्वास दिलाता है कि आने वाला अध्यात्म केवल मंदिरों, उपाश्रयों और प्रवचन सभाओं तक सीमित नहीं रहेगा। वह मनुष्य के मन, परिवार के संस्कार, समाज के चरित्र, पर्यावरण की रक्षा और वैश्विक सह-अस्तित्व से जुड़े प्रश्नों पर भी अपना प्रभाव डालेगा। आज मानव सभ्यता के सामने सबसे बड़ा संकट बाहरी संसाधनों का नहीं, आंतरिक संतुलन का है। मनुष्य के पास ज्ञान बहुत है, लेकिन विवेक कम होता जा रहा है। सुविधाएं बढ़ी हैं, लेकिन संतोष घटा है; संपर्क के साधन बढ़े हैं, लेकिन आत्मीयता कम हुई है। ऐसे समय में ऐसे अध्यात्म की आवश्यकता है जो जीवन से भागना नहीं, बल्कि उसे अधिक जागरूकता, संयम, करुणा और उत्तरदायित्व के साथ जीना सिखाए।

उनके व्यक्तित्व की अन्य मुख्य विशेषताएं एवं संभावनाएं इस प्रकार हैं:

४. मानवीय चेतना की ऊष्मा : केवल ज्ञान मनुष्य को विद्वान बना सकता है, लेकिन करुणा उसे बड़ा मनुष्य बनाती है। युवाचार्य महावीर कुमार के व्यवहार में सरलता, सहजता, विनम्रता और आत्मीयता का समन्वय उनकी आध्यात्मिकता

को मानवीय धरातल प्रदान करता है। उनकी दृष्टि में धर्म विभाजन की दीवार नहीं, मनुष्य को मनुष्य से जोड़ने वाला सेतु बन सकता है।

५. युवा चेतना को दिशा : भारत की युवा शक्ति यदि चरित्र, विवेक और नैतिकता से जुड़ी है तो वह राष्ट्र के भविष्य को बदल सकती है। तेरापंथ की मूल चेतना—अहिंसा, संयम, अनुशासन, अनेकांत, अपरिग्रह और आत्मजागरण—को यदि आधुनिक भाषा और वैश्विक समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप प्रस्तुत किया जाए, तो वह विश्व-चेतना के विमर्श में अपनी विशिष्ट भूमिका निभा सकती है।

६. विज्ञान और विकास का संतुलन : उनका मनोनयन उस अध्यात्म की संभावना है जो विज्ञान का विरोध नहीं करता, बल्कि उसे विवेक देता है; जो विकास को रोकता नहीं, बल्कि उसे मानवीय बनाता है; और जो भौतिक समृद्धि के साथ संतुलन और संयम की चेतना जोड़ता है।

आचार्य श्री महाश्रमण जी ने मुनि महावीर कुमार जी को युवाचार्य बनाकर जिस उत्तरदायित्व की धवल चादर ओढ़ाई है, उसमें केवल तेरापंथ की परम्परा का भार नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों की आशाएं भी समाहित हैं। इस अवसर पर आचार्य श्री ने उन्हें आचार्य श्री भिक्षु की परम्परा को आगे बढ़ाने का संदेश दिया।

उत्तराधिकार किसी पद का नहीं, मूल्यों का है। जब मूल्य किसी ऐसे साधक को सौंपे जाते हैं, जिसके जीवन में साधना की गहराई, ज्ञान की व्यापकता, मानवीय चेतना की ऊष्मा और नेतृत्व की प्रतिभा एक साथ दिखाई दे, तब वह घटना भारतीय अध्यात्म के एक नये वैश्विक अध्याय का उद्घाटन बन जाती है। यही इस घटना की ऐतिहासिकता है और यही युवाचार्य महावीर कुमार जी से जुड़ी सबसे बड़ी आशा भी।

भक्तामर है प्रसन्नता का प्रोटीन, इम्यून सिस्टम की बैटरी

उधना।

डॉ. साध्वी परमयशजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि भक्तामर स्तोत्र एक महाकाव्य है जिसके हर पद पर आध्यात्म की अरुणाई है। हर पैराग्राफ में साधना की सौरभ है। हर श्लोक में दिव्यता भव्यता का स्पंदन है। हर अक्षर में ऋद्धि-सिद्धि का संदेश है। आज का दिन शुभ दिन, अच्छा दिन, शानदार दिन और आश्चर्य से भरा दिन है। जहाँ भक्तामर में आदिनाथ प्रभु लाभ के स्वस्तिक बनाते हैं, तो दूसरी तरफ एक महापुरुष का हैप्पी बर्थडे है, जिसे जन्माष्टमी कहते हैं। वे हैं वासुदेव श्री कृष्ण, जो अरिष्टनेमि प्रभु के कज्जिन भ्राता थे। भक्तामर हमें देता है प्रसन्नता का प्रोटीन, सहिष्णुता का सिरप, कार्यकुशलता का कार्बोहाइड्रेट, मृदुता के मिनरल्स, जिनवाणी का रसायन, गुरुकृपा का संजीवन। भक्तामर में लाजवाब है

ऑक्सीजन ग्रहण की क्षमता, एंटीबॉडी को स्ट्रॉन्ग करने की ऊर्जा। इम्यून सिस्टम की चार्जिंग बैटरी, डेफेंसिबल पावर क्षमता। इसके साथ जुड़ा है एक कल्पवृक्ष जिससे पूरी होती है हर मनन्त और मांग। सुपर फास्ट ट्रेन है - भक्तामर, बुलेट ट्रेन ज्यो त्वरित यान है भक्तामर।

डॉ. साध्वी परमयशजी, साध्वी विनम्रयशजी, साध्वी मुक्ताप्रभा जी और साध्वी कुमुदप्रभा जी ने भक्तामर के 44 श्लोकों का संगान किया और उनकी ऋद्धि और मंत्र भी बताए। तेरापंथ सभा अध्यक्ष नेमीचंद पोरवाड़ ने सबका भक्तामर अनुष्ठान में स्वागत किया। भक्तामर अनुष्ठान में लगभग २११ जोड़ों ने भाग लिया, भक्तामर अनुष्ठान में बसंतीलाल नाहर ने सबका आभार ज्ञापन किया। लगभग ८११ श्रावक-श्राविकाओं ने बहुत ही हर्ष और उल्लास के साथ भक्तामर अनुष्ठान में भाग लिया।

प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का शुभारंभ

गांधीनगर, बैंगलोर।

तेरापंथ भवन में युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी पावन प्रभाजी ठाणा 4 के सानिध्य में प्रेक्षा फाउंडेशन के निर्देशन में तेरापंथ सभा एवं प्रेक्षा वाहिनी के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय आवासीय प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का शुभारंभ हुआ।

साध्वी पावन प्रभा जी ने सभी प्रेक्षा साधकों को उपसम्पदा की दीक्षा प्रदान की एवं कहा कि जो क्रिया हम करे उसको हम भाव क्रिया से करते हैं तो हमारी

चेतना निर्मल होती है और शुद्ध भाव बनते हैं जिससे हमारे विचार निर्मल बनते हैं और हम हमारी चेतना के ऊर्ध्वारोहण में आगे बढ़ते हैं।

आध्यात्म के क्षेत्र में अगर आगे बढ़ना है तो प्रेक्षाध्यान सबसे सुंदर उपाय है। सभा अध्यक्ष प्रकाश बाबेल ने स्वागत वक्तव्य देते हुए मुख्य प्रेक्षा प्रशिक्षक डालम सेठिया एवं संयोजिका रेणु कोठारी के श्रम हेतु साधुवाद दिया।

उपासक मधु कटारिया ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन रेणु कोठारी ने किया।

अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2026 प्रतियोगिता आयोजित

हावड़ा।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमारजी ठाणा 3 के सानिध्य में अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2026 जिला स्तरीय प्रतियोगिता अणुव्रत समिति हावड़ा द्वारा योगक्षेम विहार के योगक्षेम सभागार में आयोजित हुआ। इस अवसर पर स्कूल स्तरीय प्रतियोगिता में उत्तीर्ण क्षेत्र के 25 स्कूल से 98 विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रताप सिंह दूगड़, जोनल कॉर्डिनेटर सुनीता बैद, स्टेट कॉर्डिनेटर लीना सिंधी की गरिमामय उपस्थिति रही। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमारजी ने छात्रों को प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए

जीवन विज्ञान के सरल प्रयोग भी करवाए। प्रतियोगिता का शुभारंभ अणुव्रत समिति हावड़ा की महिला सदस्यों द्वारा अणुव्रत गीत के साथ हुआ, अणुव्रत छात्र संहिता का संकल्प उत्तर हावड़ा सभा के अध्यक्ष संदीप डागा ने करवाया। प्रताप सिंह दूगड़ का दुपट्टा पहनाकर स्वागत किया गया। अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट के विषय में जानकारी प्रदान करते हुए छात्रों का हौसला बढ़ाया। प्रतियोगिता में चित्रकला, निबंध, भाषण, कविता, गायन आदि की प्रतियोगिता में छात्रों ने उत्साह के साथ हिस्सा लिया। अणुव्रत समिति हावड़ा के उपाध्यक्ष रंजीत सिंह बैद, आदि का अथक श्रम नियोजन किया। संचालन एवं आभार ज्ञापन मंत्री बीरेंद्र बोहरा ने किया।

आकर्षण से बचें, सन्मार्ग पर दृढ़ रहें

केसिंगा।

स्थानीय तेरापंथ भवन, केसिंगा में 'तेरापंथ फैमिली मीट - उत्कर्ष 2026' का भव्य एवं प्रेरणादायी आयोजन 'समन्वय - संस्कार - संस्कृति' की भावभूमि पर संपन्न हुआ। कार्यक्रम का आयोजन उड़ीसा प्रांतीय तेरापंथी सभा एवं श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, केसिंगा के तत्वावधान में, युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के विद्वान शिष्य मुनि हिमांशु कुमार जी एवं मुनि हेमंत कुमार जी के पावन सानिध्य में हुआ। इस विशेष आयोजन में पश्चिम उड़ीसा के विभिन्न क्षेत्रों से बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं एवं तेरापंथी परिवारों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। भवानीपटना, उत्केला, टिटलागढ़, सिंधीकेला, बागुंडा, चंदूतारा, कंटाबांजी, नवरंगपुर, बरगढ़, रायगढ़ सहित विभिन्न क्षेत्रों से आए श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति ने कार्यक्रम को व्यापक एवं भव्य स्वरूप प्रदान किया। विभिन्न क्षेत्रों से आए परिवारों के सामूहिक सहभाग ने पारिवारिक एकता, आपसी समन्वय एवं तेरापंथी संस्कारों की जीवंत अभिव्यक्ति को और सुदृढ़ किया। इसके

पश्चात मुनि हिमांशु कुमार जी ने अपनी मधुर एवं भावपूर्ण गीत प्रस्तुति से उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं को आध्यात्मिक ऊर्जा से अभिभूत किया। भिक्षु भजन मंडली द्वारा प्रस्तुत सुंदर गीतिका ने कार्यक्रम में भक्ति एवं आध्यात्मिक वातावरण को और अधिक

तेरापंथ फैमिली मीट- उत्कर्ष 2026

गहन बना दिया। केसिंगा सभा के अध्यक्ष रामकुमार जैन ने अपने स्वागत वक्तव्य में कार्यक्रम की महत्ता एवं गुणवत्ता पर प्रकाश डालते हुए उपस्थित सभी परिवारों का स्वागत किया। वहीं उड़ीसा प्रांतीय तेरापंथी सभा के अध्यक्ष लक्ष्मी नारायण ने अपने उद्बोधन में तेरापंथ फैमिली मीट की आवश्यकता, इसकी उपयोगिता तथा इसके माध्यम से परिवार एवं समाज के स्तर पर सकारात्मक परिवर्तन लाने की संभावनाओं पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि ऐसे आयोजन परिवारों को एक-दूसरे से जोड़ने के साथ-साथ आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों को जीवन में उतारने का सशक्त माध्यम बनते हैं। मुनि हिमांशु कुमार जी एवं मुनि

हेमंत कुमार जी ने अत्यंत सरल, रोचक एवं प्रभावशाली शैली में उपस्थित परिवारों को समझाया कि आध्यात्मिक जीवन की राह को सोच-समझकर संभालना और निरंतर आगे बढ़ाना आवश्यक है। मुनिश्री ने समझाया कि वास्तविक जीवन में अनेक प्रकार की चुनौतियाँ सामने आएंगी। परिस्थितियाँ और आकर्षण व्यक्ति को उसके सन्मार्ग, संस्कारों एवं संस्कृति से दूर करने का प्रयास कर सकते हैं, लेकिन ऐसे समय में व्यक्ति को अपने संस्कारों और आध्यात्मिक मूल्यों पर दृढ़ता से टिके रहना चाहिए। कार्यक्रम की विशेषता यह रही कि गंभीर आध्यात्मिक एवं जीवनोपयोगी विषयों को भी अत्यंत रोचक एवं मनोरंजक तरीके से प्रस्तुत किया गया।

विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से मुनिश्री ने उपस्थित जनसमुदाय को आत्मावलोकन का अवसर दिया और यह समझाने का प्रयास किया कि हम अपने भीतर कितने संस्कार, कितनी जागरूकता और कितनी आध्यात्मिक संपदा लेकर चल रहे हैं तथा अभी जीवन में कितना और अर्जित करना शेष है। उड़ीसा प्रांतीय तेरापंथी सभा के मंत्री केशव नारायण ने आभार ज्ञापन किया।

संवाद, सम्मान और क्षमा से आती है डबल खुशियां

अहमदाबाद।

साध्वी अणिमाश्री जी के सानिध्य में तेरापंथ युवक परिषद एवं तेरापंथ महिला मंडल अहमदाबाद के तत्वावधान में तेरापंथ भवन, शाहीबाग के विशाल प्रांगण में दम्पती-कार्यशाला 'हमसफ़र' का शानदार आयोजन हुआ। इस कार्यशाला में सैकड़ों दम्पती ने उत्साह व उमंग के साथ भाग लिया। 'हैप्पी कपल-खुशियां डबल' का भव्य एवं गरिमापूर्ण कार्यक्रम हुआ। मुख्य साध्वी अणिमाश्री जी ने अपने प्रेरणादायी उद्बोधन में कहा— 'परिवार रूपी रथ के दो मजबूत पहिए हैं— पति व पत्नी। इन दोनों में जितना सामंजस्य होगा, रथ उतनी ही तीव्र गति से दौड़ेगा। पति व पत्नी का रिश्ता शादी के बाद बनता है। यह दो आत्माओं के मध्य होने वाला एक ऐसा मूक समझौता

है, जहां शब्द कम और भावनाएं अधिक मुखर होती हैं। एक आदर्श दाम्पत्य वही है, जो विपरीत परिस्थितियों में एक-दूसरे का हाथ छोड़ने की बजाय और मजबूती

दम्पती कार्यशाला 'हमसफ़र'

से थाम लेते हैं। सच्चा प्रेम केवल एक-दूसरे को देखने में नहीं बल्कि एक ही दिशा में एक साथ देखने में निहित है। दाम्पत्य जीवन में 'डबल खुशियां' लाने के लिए तीन स्तंभ सबसे महत्वपूर्ण हैं— संवाद, सम्मान व क्षमा। एक-दूसरे के साथ संवाद होने से गलतफहमियों की दीवारें खुद-ब-खुद ढह जाती हैं। एक-दूसरे की कमियों को स्वीकार करना और खुशियों का उत्सव मनाना ही गृहस्थी को स्वर्ग बनाता है।' साध्वी कर्णिकाश्री

जी ने कहा— 'रिश्ते में संवाद, विश्वास और एक-दूसरे के प्रति सम्मान ही खुशियों की असली चाबी है। अगर पति-पत्नी मिलकर जीवन की चुनौतियों का सामना करें तो खुशियां अपने आप दोगुनी हो जाती हैं।' साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने मंच संचालन करते हुए कहा— 'इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य आधुनिक जीवनशैली में आपसी तालमेल, प्रेम और वैवाहिक रिश्तों को और अधिक प्रगाढ़ व मधुर बनाना है।' साध्वी समत्वयशजी ने सुमधुर गीत 'हैप्पी कपल - जीवन सफल - खुशियां डबल' का संगान किया। डॉ. साध्वी सुप्रभा जी ने पावन कपल 2026 का नए अंदाज में नई शैली में करवाया। तेयुप अध्यक्ष कुणाल जैन, महिला मंडल अध्यक्ष सुशीला खटेड़ ने विचार रखे। दम्पति जोड़ों ने सुरीले कंटों से शानदार गीत की प्रस्तुति दी।

सृजन की सुंदर सुगंध से महकी नेपाल की पावन धरा

काठमांडू।

अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी द्वारा आयोजित 'अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट' में पहली बार नेपाल के Pathshala Nepal foundation स्कूल के 2200

बच्चों ने इस प्रतियोगिता में उत्साह पूर्वक भाग लिया। यह ऐतिहासिक भागीदारी इस बात का प्रमाण है कि अणुव्रत का संदेश नेपाल के बहुत से बच्चों तक पहुंचाने में अणुव्रत समिति काठमांडू एवंACC की

टीम सफल हो रही है। नेपाल अणुव्रत राज्य प्रभारी सम्मानीय ज्योति कुमार बेगानी पधारे और मेडल प्रदान कर नन्हें रचनाकारों को सम्मानित किया। कार्यक्रम में रमेश लुनिया, आदि उपस्थित रहे।

संक्षिप्त खबर

नेत्रदान संगोष्ठी एवं निःशुल्क नेत्र जांच शिविर

चेंबूर। तेरापंथ युवक परिषद, चेंबूर के तत्वावधान में समाज में नेत्रदान के प्रति जागरूकता बढ़ाने तथा नेत्र स्वास्थ्य के संरक्षण हेतु नेत्रदान संगोष्ठी एवं निःशुल्क नेत्र जांच शिविर का सफल आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. हितेश चापलोट एवं सुनील डुंगरवाल रहे। वहीं कार्यक्रम की सहयोगी चिकित्सक के रूप में डॉ. आस्था जैन (M.D. ophthalmologist) ने अपनी महत्वपूर्ण सेवाएँ प्रदान कीं। संगोष्ठी में उपस्थित जनसमूह को डॉ.आस्थाजी ने नेत्रदान के महत्व, इसकी प्रक्रिया एवं इससे जुड़ी भ्रांतियों के विषय में विस्तृत जानकारी दी गई। वक्ताओं ने बताया कि एक व्यक्ति का नेत्रदान 4 नेत्रहीन व्यक्तियों के जीवन में प्रकाश ला सकता है। उपस्थितजनों को नेत्रदान का संकल्प लेने के लिए प्रेरित किया गया। सेमिनार में करीब 120 जनों की उपस्थिति रही और 75 से अधिक लोगों ने अपनी आँखों की जाँच करवाई।

मंत्र दीक्षा कार्यक्रम आयोजन

कांटाबाजी। तेयुप साथी संस्कारक अंकित जैन ने बच्चों को प्रेरक कहानी के माध्यम से नमस्कार महामंत्र के प्रभाव के बारे जानकारी दी और नमस्कार महामंत्र के प्रति सच्ची श्रद्धा और निष्ठा के साथ उसका जाप करने की प्रेरणा दी। और मंत्र दीक्षा का महत्व समझाया तथा उन्हें मंत्र दीक्षा के लिए संकल्पित कराया। मंत्र दीक्षा ग्रहण करने वाले बच्चों की संख्या - 18 रहीं। तेरापंथ युवक परिषद के युवा साथी, महिला मंडल, ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं की गरिमामयी उपस्थिति ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। तेयुप अध्यक्ष गौरव जैन ने स्वागत भाषण दिया और अपने विचार सदन के सामने रखे। कार्यक्रम का प्रभावी एवं कुशल संचालन और आभार ज्ञापन तेरापंथ युवक परिषद के साथी गौरव जैन द्वारा किया गया।

Fit Yuva Hit Yuva कार्यक्रम आयोजित

गाँधीनगर दिल्ली। अभातेयुप के आयामों में एक प्रमुख आयाम F.Y.H.Y इसी क्रम में तेयुप गाँधीनगर-दिल्ली ने अपने युवाओं को Fit रहने के लिए इस कार्यक्रम का आयोजन तेरापंथ भवन, विकास मंच, कृष्णानगर, दिल्ली के प्रांगण में योग ट्रेनर दीपक सरिन व योगा ट्रेनर आँचल की उपस्थिति में हुआ। अध्यक्ष प्रकाश सुराणा ने योग ट्रेनर का व पथारे हुए सभी सभा संस्थाओं के पदाधिकारियों व युवा कार्यकर्ताओं का स्वागत व अभिनंदन किया। योग ट्रेनर ने योग की जानकारी करवाते हुए योग कब, कैसे और क्यों जरूरी है योग हमारे जीवन में इसके बारे में बताते हुए योग व प्राणायाम करवाना प्रारम्भ किया। कुशल मंच संचालन व आभार ज्ञापन प्रभारी अनुराग बोथरा ने किया।

भिक्षु दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

गाँधीनगर दिल्ली। परमपूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद से एवं डॉ. मुनि अभिजीत कुमार जी व मुनि जागृत कुमार जी के पावन सानिध्य में भिक्षु दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला का प्रेरणादायी आयोजन संपन्न हुआ। कार्यशाला में डॉ. मुनि अभिजीत कुमार जी ने अपनी अत्यंत सरल, सहज एवं प्रभावशाली प्रवचन शैली में आचार्य श्री भिक्षु के विचारों एवं दर्शन को समझाया। उन्होंने उपस्थित समाज को प्रेरित करते हुए बताया कि महापुरुषों के विचार केवल जानने के लिए नहीं, बल्कि उन्हें अपने जीवन के आचरण में उतारने के लिए होते हैं। उनके प्रेरणादायी उद्बोधन ने उपस्थित सभी श्रावक-श्राविकाओं को भिक्षु दर्शन को गहराई से समझने एवं आत्मसात करने की प्रेरणा प्रदान की। मुनि जागृत कुमार जी ने भी अपने प्रेरणादायी उद्बोधन द्वारा उपस्थित समाज को विशेष प्रेरणा प्रदान की तथा सभी को धर्म और दर्शन के अध्ययन के साथ-साथ उसके सिद्धांतों को जीवन में अपनाने के लिए प्रेरित किया। तेरापंथ युवक परिषद् गाँधीनगर दिल्ली के निवर्तमान अध्यक्ष क्रांति बरड़िया ने मुनिश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए उपस्थित श्रावक-श्राविका समाज के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया।

New Zen Sibling Workshop

केसिंगा।

स्थानीय तेरापंथ भवन, केसिंगा में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि हिमांशु कुमार जी एवं मुनि हेमंत कुमार जी के पावन सानिध्य में 'New Zen Sibling Workshop – साथ है तो बात है' का आयोजन किया गया।

कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य नई पीढ़ी में भाई-बहन एवं भाई-भाई, बहन-बहन जैसे पारिवारिक रिश्तों में बढ़ती दूरियों के कारणों को समझना तथा आपसी संवाद, सहयोग और भावनात्मक जुड़ाव के माध्यम से रिश्तों को और अधिक मजबूत बनाने के उपायों पर चिंतन करना था।

‘साथ है तो बात है’ कार्यशाला

कार्यशाला में लगभग 35 भाई-बहन के जोड़ों सहित एवं तीन-तीन प्रतिभागियों के समूहों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। कार्यशाला का शुभारंभ मुनि हिमांशु कुमार जी के मंगल उद्बोधन से हुआ।

उन्होंने रिश्तों में संवाद एवं आत्मीयता के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि परिवार केवल साथ रहने का नाम नहीं, बल्कि एक-दूसरे को समझने, सुनने और साथ देने का भाव है। वर्तमान समय में तकनीक और व्यस्त जीवनशैली ने जहां जीवन को सुविधाजनक बनाया है, वहीं

कहीं न कहीं अपनों के बीच प्रत्यक्ष संवाद को भी प्रभावित किया है। ऐसे में रिश्तों को जीवंत बनाए रखने के लिए समय देना और एक-दूसरे की भावनाओं को समझना अत्यंत आवश्यक है। इसके पश्चात मुनि हेमंत कुमार जी ने पूरे वर्कशॉप का प्रभावी नेतृत्व करते हुए प्रतिभागियों को विभिन्न संवादात्मक गतिविधियों एवं रोचक अभ्यासों के माध्यम से विषय से जोड़ा।

उन्होंने सहज और व्यावहारिक तरीके से यह समझाने का प्रयास किया कि आज की नई पीढ़ी में रिश्तों के बीच दूरी केवल भौतिक रूप से नहीं, बल्कि कम्प्युनिकेशन गैप, अपेक्षाओं, गलतफहमियों, व्यस्तता और एक-दूसरे को पर्याप्त समय न देने के कारण भी बढ़ रही है।

महावीर का जीवन पहुँचा असाधारण आध्यात्मिक ऊँचाइयों तक

फलसूंद राजस्थान। फलसूंद कस्बे में जन्मे बालक महावीर का जीवन साधारण ग्रामीण परिवेश से प्रारंभ होकर असाधारण आध्यात्मिक ऊँचाइयों तक पहुँचा। सर्वाइसिंहजी -छगनी देवी कोचर परिवार में जन्मे इस बालक का जन्म भीषण गर्मी के बीच हुआ और उसका नाम महावीर रखा गया। प्रारंभिक अवस्था में ही तेरापंथी साध्वी रूपांजी के संपर्क और उनके आशीर्वाचन ने उनके जीवन की दिशा बदल दी। साध्वीश्री के प्रभाव, परिवार के धार्मिक वातावरण और पूर्व संस्कारों के कारण बालक महावीर में बचपन से ही आध्यात्मिक झुकाव विकसित हुआ। साध्वीश्री ने भी उनके बारे में भविष्यवाणी करते हुए कहा था कि यह बालक बहुत नाम कमाएगा। यही संस्कार आगे चलकर उन्हें साधु जीवन की ओर ले गए और वे मुनि महावीर बने, फिर अपनी साधना, ज्ञान, विनय और पुरुषार्थ से मुख्य मुनि के पद तक पहुँचे। आगे चलकर जैन विश्व भारती में आयोजित एक ऐतिहासिक अवसर पर, भिक्षु स्वामी के 301वें जन्मदिवस के पावन प्रसंग में आचार्यश्री ने उन्हें अपना उत्तराधिकारी घोषित किया और 'आओ, मुनि महावीर' कहकर युवाचार्य पद प्रदान किया। यह क्षण आध्यात्मिक इतिहास का महत्वपूर्ण मोड़ बन गया, जब मुनि महावीर युवाचार्य महावीर के रूप में धर्मसंघ के भावी नेतृत्व बने। यह यात्रा केवल एक व्यक्ति की उन्नति नहीं, बल्कि संस्कार, साधना, गुरु-कृपा और पुरुषार्थ के अद्भुत संगम की कहानी है। फलसूंद की साधारण भूमि से उठकर तेरापंथ धर्मसंघ के युवाचार्य तक पहुँचना इस बात का प्रमाण है कि सच्चे संस्कार और निरंतर साधना व्यक्ति को असाधारण ऊँचाइयों तक पहुँचा सकते हैं।

रोशनी का उपहार, सबसे बड़ा उपकार

राजाजीनगर। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में राष्ट्रीय नेत्रदान पखवाड़े के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा नेत्रदान जागरूकता अभियान रैली का सफल आयोजन किया गया। रैली तेरापंथ सभा भवन से प्रारंभ होकर राजाजीनगर के प्रमुख मार्गों से होते हुए पुनः सभा भवन पहुँची। तेयुप अध्यक्ष राजेश देरासरिया ने उपस्थित सभी सदस्यों एवं प्रतिभागियों को नेत्रदान के प्रति जागरूक किया। उन्होंने नेत्रदान के महत्व, मानवता के प्रति इसके योगदान एवं इससे जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारी साझा करते हुए सभी को इस महान सेवा कार्य के लिए प्रेरित किया। रैली के दौरान प्रतिभागियों ने पूरे जोश, उत्साह एवं अनुशासन के साथ नेत्रदान के महत्व का संदेश जन-जन तक पहुँचाया। 'रोशनी का उपहार, सबसे बड़ा उपकार' एवं 'नेत्रदान महादान' जैसे प्रेरणादायी नारों और संदेशों से लोगों को नेत्रदान के लिए जागरूक किया गया। विशेष तख्तियों एवं नारों के माध्यम से जनमानस में नेत्रदान के प्रति सकारात्मक भावना एवं जागरूकता उत्पन्न करने का प्रयास किया गया। सभी सदस्यों की एकरूपता, अनुशासन, उत्साह एवं सामाजिक संकल्प ने रैली को प्रभावशाली एवं सार्थक बनाया। यह अभियान समाज में नेत्रदान के प्रति जागरूकता बढ़ाने तथा अधिक से अधिक लोगों को इस महान मानव सेवा के लिए प्रेरित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण एवं सराहनीय पहल रही।

स्वस्थ शरीर, स्वस्थ मन और खुशहाल जीवन

कोकराझार।

तेरापंथ युवक परिषद द्वारा तेरापंथ महिला मंडल, कोकराझार शाखा के सहयोग से पाँच दिवसीय नेचुरोपैथी, एक्वूप्रेशर एवं कायरोप्रेक्टर उपचार शिविर का सफल आयोजन किया गया। शिविर में TH. Dr. Mahendra Singh (MD in Acu) एवं TH. Dr. Prakash Rankawat (MD in Acu) द्वारा

विभिन्न प्राकृतिक एवं वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों के माध्यम से लोगों को उपचार एवं

नेचुरोपैथी, एक्वूप्रेशर शिविर

स्वास्थ्य संबंधी परामर्श प्रदान किया गया। शिविर के दौरान एक्वूप्रेशर, कायरोप्रेक्टर थेरेपी, कपिंग, वाइब्रेशन थेरेपी तथा मैग्नेट थेरेपी जैसी उपचार पद्धतियों की सेवाएँ

उपलब्ध कराई गईं। शिविर के संयोजक विजय भूरा, सह-संयोजक ममता सेठिया तथा सह-संयोजक सचिन छाजेर सहित पूरी टीम ने व्यवस्थाओं को सुचारू रूप से संचालित किया। आयोजन के माध्यम से 'स्वस्थ शरीर, स्वस्थ मन और खुशहाल जीवन' का संदेश दिया गया तथा प्राकृतिक एवं स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए समाज को प्रेरित किया गया।

एक आचार्य का त्रिवेणी संगम है : तेरापंथ

सिकंदराबाद।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि दीप कुमारजी एवं सहवर्ती संत मुनि काव्य कुमारजी के सानिध्य में कार्यक्रम संपादित किया गया। अपने प्रेरक प्रवचन में मुनि दीप कुमारजी ने कहा कि— एक आचार, एक विचार, एक आचार्य का त्रिवेणी संगम है तेरापंथ 'तेरापंथ केवल एक धर्मसंघ नहीं, बल्कि अनुशासन, मर्यादा, संगठन और संस्कार की जीवंत परंपरा है।

आचार्य भिक्षु द्वारा स्थापित यह संघ आज 267 वर्षों बाद भी अपने मूल सिद्धांतों पर अडिग रहकर समाज को नैतिकता, संयम और सदाचार का संदेश दे रहा है। प्रत्येक तेरापंथी का दायित्व है कि वह संघ की गौरवशाली विरासत को अपने जीवन में उतारे।' मुनिश्री ने

आगे कहा कि वर्तमान समय में यदि मानव अपने जीवन में संयम, अनुशासन और आत्मचिंतन को स्थान दे, तो अनेक समस्याओं का समाधान स्वतः हो सकता है। इस अवसर पर हम सब धर्म संघ की सेवा का संकल्प ले, यही 267वें तेरापंथ स्थापना दिवस की मनाने की सार्थकता है। मुनि काव्य कुमारजी ने अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा कि 'तेरापंथ की स्थापना केवल इतिहास का विषय नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए प्रेरणा का स्रोत है। युवा पीढ़ी यदि संघ के आदर्शों, अनुशासन और संस्कारों को अपनाए तो समाज और राष्ट्र का भविष्य उज्ज्वल बन सकता है।

कार्यक्रम में तेरापंथ धर्मसंघ की स्थापना, उद्देश्य, आदर्श एवं 267 वर्षों की प्रेरणादायी विकास यात्रा पर प्रकाश डाला गया।

संक्षिप्त खबर

अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2026 का सफलता पूर्वक आयोजन

भीलवाड़ा। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के निर्देशन में अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2026 के अंतर्गत 'हमारी ताकत हमारा परिवार' विषय पर जिला स्तर की प्रतियोगिताओं का सफलता पूर्वक आयोजन महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल शास्त्री नगर में किया गया। अणुव्रत समिति अध्यक्ष अभिषेक कोठारी ने बताया कि भीलवाड़ा जिला से कुल 36 विद्यालयों के 111 विद्यार्थियों ने इस प्रतियोगिता में उत्साहपूर्वक भाग लिया। विद्यार्थियों ने विभिन्न प्रतियोगिता चित्रकला, भाषण, निबंध, एकल गायन, समूह गायन एवं कविता में भाग लिया।

प्रतियोगिता के राज्य प्रभारी राजेश चोरडिया ने बताया कि विद्यार्थियों की रचनात्मक प्रतिभा को प्रोत्साहित करने के लिए, पारिवारिक मूल्यों को मजबूत करने तथा 'अणुव्रत' के संदेश को जन-जन तक पहुँचाने की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण प्रयास है। कार्यक्रम संयोजक महावीर खाब्या ने बताया कि जिला स्तर के विभिन्न प्रतियोगिता के लिए निष्पक्ष निर्णायकों की नियुक्ति समिति द्वारा की गई। अणुव्रत समिति भीलवाड़ा अध्यक्ष अभिषेक कोठारी ने स्वागत उद्बोधन दिया।

TPF का शपथ ग्रहण समारोह

विजयनगर। टीपीएफ बेंगलुरु वेस्ट की नई कार्यकारिणी (कार्यकाल 2026-27) का शपथ ग्रहण समारोह मुनि विनीत कुमार जी ठाणा-2 के पावन सान्निध्य में संपन्न हुआ। टीपीएफ बेंगलुरु वेस्ट के पूर्व अध्यक्ष ललित बेगानी ने स्वागत वक्तव्य दिया। टीपीएफ दक्षिण जोन के पूर्व अध्यक्ष वर्तमान में राष्ट्रीय सहमंत्री विक्रम कोठारी ने दक्षिण जोन के मनोनीत अध्यक्ष हितेश गिरिया को शपथ दिलाई और बेंगलुरु वेस्ट के पूर्व अध्यक्ष ललित बेगानी ने बेंगलुरु वेस्ट के नव मनोनीत अध्यक्ष आशुतोष नाहर को शपथ दिलवाई। टीपीएफ बेंगलुरु सेंट्रल के अध्यक्ष जितेन्द्र, आंचलिया, टीपीएफ राष्ट्रीय परामर्श एम सी बलदोया ने पूरी टीम को बधाई संप्रेक्षित की। मुनि विनीत कुमार ने मंगल आशीर्वाद प्रदान करते हुए नई टीम को प्रेरित किया कि वे आध्यात्मिक मूल्यों से जुड़े रहकर व्यावसायिक उन्नति और सामाजिक सेवा दोनों में आगे बढ़ें। संचालन टीपीएफ पूर्व मंत्री कौशल खटेड़ तथा धन्यवाद ज्ञापन टीपीएफ बेंगलुरु वेस्ट के मंत्री हर्ष बरलोटा द्वारा प्रस्तुत किया गया।

हैप्पी कपल खुशी डबल विषय पर कार्यशाला

बालोतरा।

तेरापंथ भवन बालोतरा के विशाल अमृत सभागार में समायोजित 'हैप्पी कपल खुशी डबल' विषयक कार्यशाला में संभागी दम्पतियों को प्रेरणा प्रदान करते हुए प्रोफेसर साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने कहा-पति-पत्नी परिवार रुपी रथ के सशक्त पहिए हैं समाज का व्यक्ति स्वस्थ संस्कारित होता है तो समाज भी स्वस्थ रह सकता है। परिवार की आधारशिला दम्पति को माना गया है। अग्रिम रिश्तों का प्रारंभ विस्तार यहीं से होता है। सप्ताह में रविवार आदि सात वार होते हैं- ये सातों तभी स्वस्थ और समृद्ध रह सकते हैं जब आठवें परिवार रुपी वार को सुरक्षित रखा जाए। परिवार के चिन्तनशील दम्पति अपनी पिछली पीढ़ी और अग्रिम पीढ़ी के प्रति सजग रहते हुए वर्तमानिक सदस्यों का भी संरक्षण कर सकते हैं।

आवश्यकता हे दाम्पत्य जीवन खुशहाल हो। पारस्परिक स्नेह भाव बढ़ता रहे। सहयोग, सामञ्जस्य, सहिष्णुता के सूत्रों को जीवन का आधार मानकर चलने वाले युगल दुसरों के लिए आदर्श बन सकते हैं। सुखी दाम्पत्य की पहली शर्त है - एक दूसरे

दम्पति कार्यशाला का समायोजन

की भावना का सम्मान किया जाए, कुछ बातों को अपने अंदाज से कहे और कुछ ऐसी परिस्थिति बनती हैं जिन्हें नजरंदाज भी करना चाहिए। साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने कहा- भारतीय संस्कृति परम्परा की कदर करनी चाहिए। रिश्ते आग्रह से नहीं आदर से चलते हैं। पारस्परिक विचारों का भेद हो सकता है पर, मनभेद न हो। रिश्तों को जोड़ना मुश्किल है पर तोड़ना आसान है। दाम्पत्य जीवन धैर्य और

गांभीर्य गुण की सुवास होनी चाहिए। पति-पत्नी का रिश्ता आदर्श होता है, उनकी सोच व्यवहार का असर उनकी संतानों पर पड़ता है, इसलिए जागरुकता की अपेक्षा है। साध्वी श्री ने भक्तामर का रिद्धि मंत्रों के साथ अनुष्ठान करवाया इस अवसर पर साध्वी सुदर्शन प्रभा, साध्वी राजुल प्रभा, साध्वी चैतन्य प्रभा और साध्वी शौर्य प्रभा ने सामूहिक संगान के द्वारा अनेक जीवन सूत्रों का उपहार दिया। साध्वी चैतन्य प्रभा, साध्वी राजुल प्रभा एवं साध्वी शौर्य प्रभा ने प्रेरक एक्टिविटीज पेश की। साध्वी राजुलप्रभा ने कहा खुशहाल जिंदगी के लिए अनुशासन का पैरामीटर होना आवश्यक है। इस अवसर पर तात्कालिक आयोजित प्रतियोगिता में 11 बारह व्रतधारी जोड़े एवं 10 जैनविद्या अध्ययनरत जोड़ों को तेरापंथ सभा द्वारा सम्मानित किया गया। साध्वी सुदर्शनप्रभाजी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

तेरापंथ धर्मसंघ व्यक्तित्व निर्माण की प्रयोगशाला

कटिहार।

दीक्षांत समारोह को संबोधित करते हुए मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा आयोजित यह कार्यशाला कुशल वक्ता तैयार करने का सर्वश्रेष्ठ माध्यम है। इससे भाषण देने की कला का विकास होता है और मंच पर प्रभावी प्रस्तुति देने की समझ मिलती है।

यह न केवल एक कला का विकास है, बल्कि स्वयं को आगे बढ़ाने का एक सशक्त जरिया भी है। इससे मन का डर और संकोच दूर होता है, भावों की सही अभिव्यक्ति होती है तथा व्यक्ति के भीतर छिपी योग्यता उजागर होती है। सीपीएस ने व्यक्तित्व को तराशने और तलाशने का कार्य किया है। हमें अपनी आंतरिक शक्ति को पहचानकर स्वयं को आगे बढ़ाना चाहिए। अभातेयुप के विभिन्न आयामों से संघ शक्ति मजबूत बनी है।

मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ व्यक्तित्व निर्माण की

CPS दीक्षांत समारोह का आयोजन

एक प्रयोगशाला है। इस कार्यशाला के माध्यम से न केवल अभिव्यक्ति क्षमता का विकास होता है, बल्कि ज्ञान और चिंतन शैली भी समृद्ध होती है। एक अच्छे वक्ता को जितना बोलना होता है, उससे अधिक अध्ययन करना पड़ता है। केवल तकनीक पर निर्भर न रहकर स्वाध्याय के जरिए ज्ञान अर्जित करें। कार्यशाला में जो सीखा और पाया है, उसे निरंतर विकसित करते रहें।

अतिथियों एवं प्रशिक्षकों के वक्तव्य:

१. सोनू डागा (सीपीएस प्रभारी) : सीपीएस अभातेयुप का एक अत्यंत महत्वपूर्ण आयाम है, जिसने निरंतर बुलंदियों को छुआ है। इसकी उपयोगिता को व्यापक स्तर पर स्वीकार किया गया है। उन्होंने सफल आयोजन के लिए कटिहारवासियों का आभार व्यक्त किया।

२. आदित्य मांडोट (प्रोविजनल राष्ट्रीय प्रशिक्षक, सीपीएस एकेडमी) : हमें अपनी टीम पर विश्वास रखना चाहिए और दूसरों को प्रोत्साहित करना सीखना चाहिए। हमारे भीतर जो खूबियां हैं, उन्हें पहचानकर जीवन में उतारने का प्रयास करना चाहिए।

३. अमित नाहटा (प्रबुद्ध विचारक, अभातेयुप): हर व्यक्ति के भीतर कमियां और काबिलियत दोनों होती हैं। मुख्य बात यह है कि हम अपनी सोच और दृष्टिकोण को किस दिशा में रखते हैं।

सात दिवसीय प्रशिक्षण एवं आभार: सप्त-दिवसीय कार्यशाला के दौरान प्रशिक्षक आर्यन गुलेछा एवं कुशल भंसाली ने संभागियों को आत्मविश्वास जगाने तथा एक सफल वक्ता के गुणों और बारीकियों से अवगत कराया। कार्यक्रम के अंत में तेयुप मंत्री श्रेयांस खटेड़ ने सभी संतों, अतिथियों, प्रशिक्षकों एवं संभागियों का आभार व्यक्त किया।

शपथ ग्रहण समारोह

गुवाहाटी। आचार्य तुलसी महाश्रमण रिसर्च फाउंडेशन (ATMRF) गुवाहाटी के नव मनोनीत अध्यक्ष विजय सिंह डोसी एवं उनके पदाधिकारी गण का शपथ ग्रहण समारोह जैन संस्कार विधि से तेरापंथ धर्मस्थल में हुआ। संस्कारक आनंद सुराणा, अशोक

बोरड, बजरंग डोसी, छतर सिंह चौरडिया एवं सतीश भादानी ने मंगलभावना यंत्र की विधिवत स्थापना कराई एवं पुरे विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपादित करवाया। परिषद की ओर से अध्यक्ष रोहित सुराणा ने आध्यात्मिक मंगलकामनाएं प्रेषित की।

❖ हर व्यक्ति के मन में कुछ होने की कामना हो। इसके लिए कुछ अपेक्षानुसार कठोर जीवन जीने का अभ्यास करना चाहिए। जीवन में प्रतिस्रोतगामिता रहे।

— आचार्य श्री महाश्रमण

धातों में बंधे जैन संस्कार: देश भर में गूंजा जैन विधि से रक्षाबंधन का शंखनाद

रक्षाबंधन कार्यशाला का शुभारंभ

सुरत।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा निर्देशित 'जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन कार्यशाला' का भव्य आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ पंच परमेष्ठी नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण से हुआ। संस्कारक विजयकांत खटेड, धर्मचंद सामसूखा, मिटालाल भोगर, गौतम वैदमुथा, मनीष मालू, विनीत

सामसूखा, अरविन्द बाफना, पंकज बुच्चा, अभय बोथरा ने जैन संस्कार विधि का महत्व समझाते हुए विभिन्न मंगल मंत्रों के उच्चारण के साथ रक्षाबंधन पर्व को जैन संस्कार विधि से मनाने की सरल एवं प्रायोगिक प्रस्तुति दी। इस अवसर पर रक्षाबंधन की विधि को विस्तारपूर्वक समझाया गया, ताकि सभी उपस्थित सदस्य स्वयं इस विधि को अपनाने के साथ-साथ अन्य लोगों को भी इसके लिए प्रेरित कर सकें।

रक्षा सूत्र बंधन की विधि और धार्मिक महत्व

अहमदाबाद पूर्व।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के जैन संस्कार विधि के मुख्य प्रशिक्षक एवं उपासक प्राध्यापक डालिमचंद नवलखा कार्यशाला का संचालन करते हुए जैन संस्कार विधि से रक्षा सूत्र बंधने की विधि, उसके महत्व और धार्मिक भावना से जुड़े सत्कर्मों की विस्तृत जानकारी देते हुए आवश्यक सामग्री की जानकारी प्रदान की। दोनों

संस्कारकों ने मंगल मंत्रोच्चारण के साथ तिलक वर्धापन करवाते हुए रक्षा सूत्र (राखी) बांधने की विधि सम्पन्न करवाई। कार्यक्रम में सहभागित सभी जोड़ो द्वारा मंगल भावना यंत्र कि स्थापना करवाते हुए मंगल भावना मंत्रों का सामूहिक उच्चारण किया गया।

विविध मंत्रोच्चारण के साथ कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए संस्कारको ने सभी को आशीर्वाद रूपी मंत्र सुनाये। वीरेंद्र मणोत ने उपस्थित सभी को जैन संस्कार

विधि से जन्मोत्सव, तप सम्पूति जैसे कार्यक्रम जैन संस्कार विधि से मनाने की प्रेरणा दी। 25 भाई-बहनों की जोड़ी से समायोजित इस कार्यशाला में कांकरिया सभा के उपाध्यक्ष अशोक दुगड़, परिषद् से सहमंत्री संदीप बरडीया सहित श्रावक-श्राविकाओं की उत्साहपूर्ण उपस्थिति रही। हितेश लुणिया ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम के संयोजक गौरव भंसाळी एवं संदीप बरडिया का विशेष सहयोग रहा।

रक्षा बंधन अपनत्व का त्यौहार

इरोड।

महातपस्वी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की विदुषी सुशिष्या साध्वी सोमयशजीआदि ठाणा 3 के सान्निध्य में स्थानीय तेरापंथ भवन में आ भा ते यु प निर्देशित रक्षा बन्धन कार्यशाला का कार्यक्रम आयोजित हुआ। साध्वीश्री जी ने कहा कि सभी को जैन संस्कार

विधि अपनानी चाहिए। इससे हमारे अंदर जैनत्व के भाव पुष्ट होते हैं। नमस्कार महामंत्र के द्वारा कार्यशाला की शुरुआत हुयी। जैन संस्कारक सुरेन्द्र भंडारी, राजेश बोथरा ने विभिन्न मंत्रोच्चार के द्वारा और ज्ञानशाला के ज्ञानार्थीओ द्वारा रक्षाबंधन का सामूहिक कार्यक्रम आयोजित हुआ। संस्कारक द्वय ने जैन विधि वह मंगल भावना यंत्र की पूर्ण जानकारी दी।

रक्षाबंधन - भाईचारे से विश्व-बंधुत्व तक का पावन सेतु

गुवाहाटी।

आचार्यश्री महाश्रमणजी के विद्वान् सुशिष्य मुनि श्री आनंद कुमार 'कालू' ने कहा कि पवित्र प्रेम, स्नेह और सौहार्द भाव को बढ़ाने वाला पर्व है रक्षाबंधन। भारतीय परम्परा में अनेक पर्व हैं जिसमें रक्षाबंधन का पर्व अपने आप में विशिष्ट कहलाता है। रक्षा शब्द विश्व इतिहास में महत्वपूर्ण रहा है।

प्रत्येक व्यक्ति में सुरक्षा की भावना रहती है, इसीलिए इसे मानव जीवन के लिए यह प्राण, त्राण, शान, आश्वास, विश्वास तथा सत्यं, शिवं, सुन्दरम् का प्रतीक माना गया है। जहां एक गृहस्थ व्यक्ति शरीर, सत्ता, सम्पदा, परिवार तथा संबंधों की सुरक्षा पर ध्यान देता है तो एक आध्यात्मिक और धार्मिक जीवन जीने वाले के लिए आत्म सुरक्षा सर्वोपरि है।

उन्होंने कहा कि आज के इस भौतिकता के चकाचौंध में मानव धन को सुरक्षित रखने व बढ़ाने में अपनी शक्ति का उपयोग करता है। अथवा परिवार सत्ता सम्पदा की सुरक्षा करता है।

कटु जीवन में भी मधुरता का संचार करें इतिहास साक्षी है कि व्यक्ति ने अपने राष्ट्र की सुरक्षा के लिए कितने संघर्ष किए हैं, किन्तु रक्षा का मूल हार्द है- जीवन में प्रेम दया, करुणा, अहिंसा, समन्वय, सहयोग की चेतना का जागरण जो कि कटु जीवन में मधुरता का संचार करे तथा सम्पूर्ण विश्व में भाईचारे को स्थापित करें। वसुधैव कुटुम्बकम् सम्पूर्ण विश्व को परिवार की उपमा से उपमित करने वाला यह रक्षाबंधन का यह पर्व जैन और वैदिक दोनों परम्पराओं में समान रूप से महत्व रखता है। जन जीवन को नैतिकता, प्रामाणिकता और चरित्र निष्ठा का संदेश

देने वाला यह पर्व आनंददायी व मंगलकारी है। इसके संबंध में प्राप्त कथानक विचारों की व्यापकता लिए हुए हैं। उन्होंने कहा कि लाखों-करोड़ों भारतवासी चाहे वे जैन, बौद्ध, सिख, सनातन तथा मुस्लिम धर्म में भी विश्वास करते हैं। राखी के कच्चेधागे जो बहन द्वारा भाई की कलाई पर बांधे जा रहे हैं वह मात्र औपचारिक उपकरण बन रहा है। जहां भाई की सोच अच्छी व कीमती राखी पर अटक रही है तो बहन का ध्यान मात्र धन पर केन्द्रित रह जाता है। वह देखती है कि भाई कितना पैसा (धन) दे रहा है। परन्तु इसके पीछे जो प्यार स्नेह सौहार्द का भाव होना चाहिए वह भुलाया जा रहा है। यदि बहन भाई दोनों अपना नैतिक कर्तव्य समझ कर अपने आपको आरक्षित करे तो पारिवारिक प्रेम, सामाजिक समरसता तथा राष्ट्रीय हितों में अभिवृद्धि हो सकती है।

भाई बहन के विश्वास का प्रतीक

साउथ कोलकाता।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् (अभातेयुप) के मार्गदर्शन में तेरापंथ युवक परिषद्, साउथ कोलकाता द्वारा तेरापंथ साउथ सभा में 'जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन कार्यशाला' का आयोजन किया गया। कार्यशाला में 20 बच्चों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की, जिससे पूरा वातावरण आनंदमय, संस्कारमय एवं प्रेरणादायी बना रहा।

इसके पश्चात् तेयुप साउथ कोलकाता के अध्यक्ष प्रशांत श्यामसुखा ने स्वागत उद्बोधन देते हुए सभी बच्चों एवं अभिभावकों का स्वागत किया।

उन्होंने ऐसे संस्कारपरक आयोजनों के माध्यम से नई पीढ़ी को जैन संस्कृति, परंपराओं एवं जीवन-मूल्यों से जोड़ने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। कार्यशाला के संस्कारक राकेश नाहटा ने बच्चों को रक्षाबंधन पर्व के आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व, भाई-बहन के पवित्र संबंध तथा जैन संस्कार विधि के अनुरूप पर्व मनाने की प्रेरणा दी। विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से बच्चों को रक्षाबंधन के मूल भाव, पारिवारिक प्रेम, सादगी एवं संस्कारों का महत्व समझाया गया। बच्चों ने पूरे उत्साह एवं उमंग के साथ कार्यशाला में सहभागिता की, मंत्री हर्ष दुगड़ ने आभार ज्ञापन किया।

रक्षा बंधन कार्यशाला का आयोजन

जयपुर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद् जयपुर द्वारा अणुविभा जयपुर केन्द्र में 'जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन' कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ सामूहिक नमस्कार महामंत्र के उच्चारण

के साथ हुआ। कार्यशाला को संबोधित करते हुए ही संस्कारक राजेन्द्र बांठिया ने कहा कि किसी भी मांगलिक प्रसंग को जैन मंत्रोच्चार के साथ सादगी से मनाना एक महनीय उपक्रम है। इसके माध्यम से संस्कारक जैन मान्यताओं को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य कर रहे हैं। संस्कारक गौतम बरडिया ने रक्षाबंधन के महत्व पर प्रकाश डाला।

रक्षाबंधन प्रेम, विश्वास और त्याग को मजबूत करने का अवसर

गाँधीनगर दिल्ली।

मुनि अभिजीत कुमार जी ने रक्षाबंधन पर्व के आध्यात्मिक महत्व पर प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि यह पर्व केवल भाई-बहन के स्नेह का प्रतीक नहीं, बल्कि प्रेम, विश्वास, त्याग एवं संस्कारों को मजबूत करने का अवसर है। मुनिश्री जागृत कुमार जी ने रक्षाबंधन के अवसर पर प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि सच्ची रक्षा केवल कलाई पर रक्षासूत्र बाँधने से नहीं, बल्कि एक-दूसरे के जीवन में अच्छे संस्कार, सद्भाव और आध्यात्मिक चेतना जगाने से होती है। उपासक व संस्कारक मनीष छलाणी, संस्कारक प्रकाश सुराणा, हेमराज

राखेचा व महेन्द्र कुमार श्यामसुखा ने पूरे विधि-विधान व मंगल मंत्रोच्चार के साथ कार्यशाला को संपादित किया। कार्यशाला का शुभारंभ सामूहिक नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ किया गया। स्वागत वक्तव्य तेयुप अध्यक्ष प्रकाश सुराणा ने पधारे हुए सभी महानुभावों का स्वागत किया। संचालन संस्कारक हेमराज राखेचा एवं महेन्द्र कुमार श्यामसुखा द्वारा किया गया। रक्षाबंधन अनुष्ठान संस्कारकों के निर्देशानुसार सभी बहनों ने अत्यंत आध्यात्मिक वातावरण में अपने भाइयों का तिलक कर कलाई पर रक्षासूत्र बाँधा मंच संचालन व आभार ज्ञापन प्रभारी हितेश दुगड़ ने किया।

रक्षाबंधन कार्यशाला का भव्य आयोजन

हासन। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद् हासन द्वारा जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन कार्यशाला का कार्यक्रम तेरापंथ भवन हासन में आयोजित किया गया।

चिकमंगलूर के जैन विधि संस्कारक महावीर सकलेचा ने कहा इस कार्यशाला के द्वारा हमारे सामाजिक कार्य जैसे जन्मदिन, विवाह, गृह प्रवेश आदि कार्य जैन विधि से करें ताकि हम अपने जीवन में अहिंसा का पालन करते हुए, हिंसा करने से बचे।

तेयुप के अध्यक्ष विकाश कोठारी ने सभी का स्वागत किया।

तपोमय तेरापंथ - जहाँ हर कण में है साधना की गूँज

धैर्य और आत्मशुद्धि की प्रेरणा देता है आयंबिल तप

यशवंतपुर-बैंगलोर।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल, यशवंतपुर द्वारा 4 सितंबर को सामूहिक आयंबिल तप अनुष्ठान का आयोजन श्रद्धा एवं आध्यात्मिक उल्लास के साथ किया गया। आयंबिल तप केवल आहार के संयम का ही नहीं, बल्कि मन, वचन एवं इंद्रियों के संयम का भी साधन है। यह तप साधक को धैर्य, आत्मचिंतन एवं आत्मशुद्धि की प्रेरणा प्रदान करता है। कार्यक्रम का शुभारंभ सामूहिक नमस्कार

महामंत्र के उच्चारण से हुआ। मंडल की अध्यक्ष रेखा पितलिया ने सभी तपस्वी भाई-बहनों का स्वागत एवं अभिनंदन किया। निवर्तमान अध्यक्ष मीनाक्षी दक ने आयंबिल अनुष्ठान के महत्व एवं आध्यात्मिक लाभों की जानकारी प्रदान की। तपश्चात भगवान पार्श्वनाथ का जप करवाया गया। कार्यक्रम में यशवंतपुर सभा के अध्यक्ष कुंदन गन्ना एवं उनकी टीम, युवक परिषद के अध्यक्ष सुनील बोलिया एवं उनकी टीम महिला मंडल पदाधिकारी सहित अनेक सदस्यों की उपस्थिति रही।

तप अनुमोदना कार्यक्रम

गोरेगांव।

पूज्यप्रवर आचार्यश्री महाश्रमणजी की महती अनुकम्पा एवं मंगल आशीर्वाद से शासनश्री साध्वी विधावतीजी द्वितीय आदि साध्वी वृंद के पावन प्रेरणा से, दृढ़ मनोबल के साथ तपस्वी आशा विकास धाकड़

(शिशोदा) गोरेगांव के भद्रोतर तप की तपस्या की अनुमोदना में गोरेगांव का पूरा श्रावक समाज की सहभागिता रही तेरापंथ सभा, युवक परिषद, महिला मंडल एवं ज्ञानशाला परिवार एवं पुरे तेरापंथ समाज से सभी पदाधिकारिण एवं श्रावक समाज की सराहनीय उपस्थिति रही।

भोजन की आसक्ति त्याग आत्मशुद्धि की ओर

विजयनगर, बैंगलोर।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल विजयनगर द्वारा दिनां युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि विनीत कुमार जी एवं मुनि पुनीत कुमार जी के पावन सान्निध्य में स्थानीय तेरापंथ भवन में सामूहिक आयंबिल तप अनुष्ठान का आयोजन किया गया। अध्यक्ष महिमा पटवारी ने सभी का स्वागत किया। जैन धर्म में आयंबिल को विशिष्ट तप के रूप में माना गया है। इसमें

साधक दिन में एक बार केवल सदा उबला हुआ और नीरस भोजन करता है, इसमें सभी प्रकार के रस युक्त और गरिष्ठ पदार्थों का त्याग किया जाता है। इस तप का उद्देश्य शरीर को कष्ट देना नहीं बल्कि भोजन और स्वाद के प्रति आसक्ति को समाप्त कर आत्मिक शुद्धि प्राप्त करना है। महिला मंडल द्वारा आयोजित इस अनुष्ठान में 72 भाई- बहनों ने सामूहिक रूप से आयंबिल तप लिया। तप अनुष्ठान के आयोजन में संयोजिका निवर्तमान अध्यक्ष मंजू गदिया एवं अनीता पटवारी का श्रम योगभूत बना।

सामूहिक
आयंबिल सम्पन्न

तपस्या मोतियों का हार है, जीवन का भव्य श्रृंगार

सेलम।

साध्वी संयमलता जी के सान्निध्य में तपस्वी बहन हेमा के 31 दिवसीय मासखमण तप की अनुमोदना हेतु भावपूर्ण तेजोमय तपोभिनंदन समारोह आयोजित किया गया। साध्वी मार्दव श्री जी ने संचालन करते हुए कहा तप जीवन को मंगलमय बनाने वाला मंगल कलश

है। साध्वी संयमलता जी ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा, जीवन को ज्योतिर्मय बनाने वाला ज्योति कलश है। मासखमण की तपस्या मोतियों का हार है, जीवन का भव्य श्रृंगार है। आत्मशोधन की एक विलक्षण प्रक्रिया है, भवपार कराने वाली विशेष नोखा है तप करने वाली A से active B से brave और E से evergreen बन जाती है।

आयंबिल की अग्नि से कर्म होते हैं भस्म

अहमदाबाद।

साध्वी अणिमाश्री जी के सानिध्य में शाहीबाग तेरापंथ भवन में तेरापंथ महिला मंडल अहमदाबाद द्वारा सामूहिक आयंबिल अनुष्ठान रखा गया। साध्वी अणिमाश्री जी की प्रेरणा से शाहीबाग क्षेत्र में लगभग साढ़े चार सौ आयम्बिल हुए। साध्वी अणिमाश्री जी ने आयम्बिल की महत्ता को बताते हुए कहा - आयम्बिल स्वाद विजय का महत्वपूर्ण अनुष्ठान है। यह केवल शरीर को भूखा रखने का ही

तप नहीं है बल्कि मन और इन्द्रियों पर विजय पाने का आध्यात्मिक मार्ग है। इस तप में हम विजय का त्याग करके अपनी सबसे शक्तिशाली इन्द्रिय रसना पर नियंत्रण पाना सीखते हैं। जैसे आग में तपने से सोना शुद्ध हो जाता है, वैसे ही आयंबिल की अग्नि में तपने से आत्मा के जन्म-जन्म के भारी कर्म जलकर भस्म हो जाते हैं। आध्यात्मिक लाभ के साथ-साथ आयंबिल का वैज्ञानिक महत्व भी है। यह तप पाचन तंत्र को शुद्ध व शक्तिशाली बनाता है। यह तप सहनशीलता को बढ़ाने

वाला है, अहंकार का विसर्जन करने वाला है, विघ्न-बाधाओं का निवारक है। प्रत्येक व्यक्ति को प्रति माह एक आयंबिल अवश्य करना चाहिए। साध्वी श्री ने कहा - आज अखिल भारतीय महिला मंडल के निर्देशानुसार पूरे भारतवर्ष में आयम्बिल अनुष्ठान हो रहा है। अहमदाबाद महिला मंडल ने भी अच्छा श्रम किया है। हमारी प्रेरणा एवं महिला मंडल की जागरूकता एवं सक्रियता से शाहीबाग में अच्छी संख्या में आयम्बिल हुए हैं। ये आध्यात्मिक अनुष्ठान निरन्तर वर्धमान रहें।

आयंबिल से होता है विघ्न निवारण

कटिहार।

आचार्य श्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि प्रशांतकुमार जी, मुनि कुमुदकुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ महिला मंडल कटिहार द्वारा अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित सामूहिक आयम्बिल का आयोजन किया गया। जनसभा को संबोधित करते हुए मुनि प्रशांत कुमारजी ने कहा - तपस्या विविध प्रकार की होती है।

आयम्बिल एक विशेष तप साधना है। इसका बहुत बड़ा महत्व है क्योंकि खाना वह भी एकदम निरस भोजन करना जिससे हमारी आसक्ति कम हो। रसनेन्द्रिय विजय की साधना है आयम्बिल। जीभ पर कंट्रोल करना

बड़ा मुश्किल होता है। मनपसंद वस्तु को छोड़ना, मन पर नियंत्रण रखना सहज नहीं है। हजारों हजारों लोग इस तप को करते हैं। कर्म निर्जरा के साथ साथ संकट निवारण, विघ्न निवारण, उपद्रव निवारण के लिए भी आयम्बिल तप किया जाता है। प्राचीन काल में अनेक जगह परम्परा थी कि प्रत्येक घर में हर दिन आयम्बिल होता जिससे दैवीय उपद्रव नहीं होता। द्वारिका नगरी की सुरक्षा आयम्बिल के कारण से होती रही। नवपद की आराधना आयम्बिल के साथ की जाती है। आयम्बिल के साथ जपयोग साधना के महत्व को बढ़ा देता है। श्रीपाल मैना सुंदरी का जीवन दर्शन कर्मयोग एवं आयम्बिल तप की महत्ता को उजागर करता है। मुनि

कुमुद कुमारजी ने कहा - जन्माष्टमी का सम्बंध योगीराज श्री कृष्ण के साथ जुड़ा है। सनातन संस्कृति एवं जैन धर्म दोनों में उनका सम्माननीय स्थान है। श्री कृष्ण के भव में वासुदेव एवं आगामी भव में तीर्थंकर बनना उनकी विशिष्ट आध्यात्मिक भावना का सूचक है। उनके जीवन में आध्यात्मिकता का भाव भरपूर था। उनके इसी भाव के कारण सैकड़ों लोगों ने संयम को अंगीकार किया। उनका सम्यक् दृष्टिकोण हम सबके लिए प्रेरणादायी है। उनके गुण आध्यात्मिक एवं सामाजिक दोनों दृष्टियों से प्रेरक है। हनुमान नाहटा ने बताया - महिला मंडल अध्यक्ष संगीता पटवारी ने विषय प्रस्तुति दी। लगभग 45 साधकों ने आयम्बिल तप आराधना की।

तप से होती है आत्मा निर्मल

कटक।

जैन दर्शन में तप के बारह प्रकार बताए गए हैं, जिनके माध्यम से त्याग, संयम और साधना की भावना को विकसित किया जाता है। इसी आध्यात्मिक साधना की प्रेरणादायी मिसाल प्रस्तुत करते हुए कुसुम कोठारी ने कटक में मुनि मोहजीत कुमार जी के सान्निध्य में 30 दिवसीय मासखमण तप का प्रत्याख्यान किया। कटक चातुर्मास के अंतर्गत मुनिश्री के सान्निध्य में यह द्वितीय मासखमण का तप हुआ। उनके तप की अनुमोदना में आयोजित प्रत्याख्यान समारोह में संबोधित करते हुए मुनि मोहजीत कुमार जी ने कहा कि तप आत्मशुद्धि के साथ-

साथ संघ की प्रभावना और वृद्धि का भी महत्वपूर्ण आधार है। मोक्ष की ओर ले जाने वाले मार्ग में तप का विशेष स्थान है। तपस्वी का उद्देश्य कर्मों की निर्जरा करते हुए आत्मा को अधिक निर्मल बनाना है। तप शरीर, मन और भावों को अनुशासित करने तथा आंतरिक शुद्धि का सशक्त माध्यम है। मुनि श्री ने कहा कि भारतीय आध्यात्मिक परंपराओं में तपस्या को सदैव विशेष महत्व मिला है। जैन धर्म में तप की साधना अपनी विशिष्ट पहचान रखती है, जिसमें त्याग, संयम तथा कई अवसरों पर निराहार एवं निर्जल साधना का भी समावेश होता है। तप व्यक्ति के भीतर धैर्य, आत्मविश्वास और संकल्प की शक्ति को विकसित करता है। मुनि भव्यकुमार

जी ने तप की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि तप उच्च मनोबल और आत्मसाधना की दिशा में बढ़ने का प्रथम सोपान है। निरंतर साधना के द्वारा व्यक्ति अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण प्राप्त करता है और आत्मिक विकास की ओर कदम बढ़ाता है। वहीं मुनि जयेश कुमार जी ने तपस्या के अनुभवों को रेखांकित करते हुए कहा कि दीर्घकालीन तप के दौरान साधक को अनेक प्रकार के अनुभवों और उतार-चढ़ावों से गुजरना पड़ता है। आहार की स्थिति में व्यक्ति को मुख्यतः बाहरी ऊर्जा का अनुभव होता है, जबकि निराहार साधना के दौरान उसकी अंतर्निहित शक्ति और आत्मबल का अनुभव अधिक स्पष्ट रूप से सामने आता है।

ज्ञानशाला : विनय और संस्कार के बीज से भविष्य का वटवृक्ष

जीवन निर्माण की पाठशाला है ज्ञानशाला

कटिहार।

मुनि प्रशांत कुमारजी, मुनि कुमुद कुमारजी के सान्निध्य में ज्ञानशाला दिवस(ज्ञानशाला संस्कारों के जागरण की शाला) का कटिहार में आयोजन हुआ। जनसभा को संबोधित करते हुए मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा- ज्ञानार्थियों की प्रेरक संदेश देने वाली प्रस्तुती देखी। ज्ञानशाला के प्रति आकर्षण अपने आप में सुखद संकेत है जो ज्ञानशाला आते हैं उन्हें चिंतन करना चाहिए कि कैसे अच्छा जीवन जिएं। कैसे परिवार के साथ रहें। ज्ञानशाला में जीवन का निर्माण होता है।

माता-पिता जागरूक होंगे तो बच्चों का भविष्य अच्छा रहेगा। ज्ञानशाला जीवन निर्माण की पाठशाला है। अच्छी बातें, अच्छी आदतें सीखने का माध्यम है ज्ञानशाला। घर का माहौल, धार्मिक वातावरण जैसा होता है बच्चे वैसा ही सीखते हैं। बच्चे हर बात को शीघ्र ग्रहण करते हैं।

घर के सदस्यों का व्यवहार ऐसा हो कि बच्चे अच्छी बातें सीख सकें। परिवार में भाषा कैसी होनी चाहिए जिससे बच्चे सम्यक तत्व को सीख पाएं। बच्चों को संस्कारित करने के लिए अभिभावकों को अपना जीवन संस्कारवान बनाना चाहिए। अच्छी बातें सुनने से अच्छा

ग्रहण कर पाते हैं। हमारा मन भी अच्छी खुराक को ग्रहण करें ये प्रयास होना चाहिए। अच्छी प्रेरणा को ग्रहण करने का प्रयास करेंगे तो हमारा जीवन एक आदर्श जीवन होगा। बहुत साधुवाद के पात्र हैं ज्ञानशाला की प्रशिक्षक जो अपने समय, अपनी शक्ति का नियोजन ज्ञानार्थी के जीवन निर्माण में कर रही हैं। मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा - गुरुदेव श्री तुलसी की महान देन है ज्ञानशाला। ज्ञानशाला व्यक्तित्व निर्माण की प्रयोगशाला है।

जीवन में जैनत्व, श्रावकत्व के संस्कार बहुत जरूरी हैं जो संस्कार बचपन में मिलते हैं वो ताउम्र काम करते हैं। बचपन नींव का काम करता है। नींव मजबूत होने से ही भविष्य स्थायी रूप से सुरक्षित रह पाता है। वर्तमान समय में शिक्षा का महत्व बढ़ा है ऐसे में सम्यक संस्कार बहुत ज्यादा अपेक्षित हैं।

सभा मंत्री राजकुमार पुगलिया, महासभा बिहार झारखंड आंचलिक प्रभारी राजेश पटावरी, नेपाल बिहार सभा अध्यक्ष विरेंद्र संचेती ने विचारों की अभिव्यक्ति दी। ज्ञानशाला संयोजिका शांति नाहटा ने ज्ञानशाला का इतिहास प्रस्तुत किया। आभार हनुमान नाहटा ने किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन संयोजिका निशा पटावरी ने किया।

ज्ञानशाला संगम - संस्कार, संस्कृति और सफलता की ABCD

बारडोली।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा बारडोली एवं ज्ञानशाला परिवार द्वारा ज्ञानशाला दिवस एवं वार्षिकोत्सव का आयोजन हुआ। तेरापंथ सभा के मंत्री प्रकाश हिंगड ने स्वागत वक्तव्य किया। कार्यक्रम में ज्ञानशाला राष्ट्रीय संयोजक सोहनराज चोपड़ा की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का उद्घाटन सुरेश चन्द्र मेहता ने किया, ज्ञानशाला प्रकोष्ठ समिति सदस्य प्रवीण मेडतवाल ने ज्ञानशाला के उद्देश्य एवं बच्चों के जीवन में इसके सकारात्मक प्रभाव को रेखांकित किया। आपने सभी प्रस्तुतियों की सराहना की और कहा कि यह बच्चों को धर्म एवं संस्कारों से जोड़ने का एक सुंदर प्रयास है। गुजरात आंचलिक संयोजिका मनिता चोपड़ा, आंचलिक सह संयोजिका ज्योति मेडतवाल ने

अभिव्यक्ति प्रदान की। तेरापंथ टाइम्स के संपादक जयेश मेहता ने 'ज्ञानशाला संस्कारों के जागरण की शाला' विषय पर वक्तव्य दिया और कहा कि आज के युग में बच्चों में संस्कार भरना बहुत जरूरी है जो हमें ज्ञानशाला के माध्यम से मिल सकते हैं। विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियां हुई जिसमें ABCD चढ़ो सफलता की सीढ़ी, हम हैं जैन धर्म के बच्चे, संस्कारों की पाठशाला ज्ञानशाला, धन्य धन्य व दिन, युवाचार्य श्री महावीर मुनि के जीवनचरित्र पर नाटिका, योगनृत्य, देशभक्ति गीत, तीर्थंकरों के चिह्न, अभिभावकों की प्रस्तुति, प्रशिक्षिकाओं द्वारा आत्मा की पुकार आदि विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियां हुई।

आभार ज्ञापन प्रशिक्षिका श्रेया बडोला ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुख्य प्रशिक्षिका धर्मिष्ठा मेहता व सह प्रशिक्षिका चेतना दक ने किया।

ज्ञानशाला जीवन का एक मंगलमय कलश है

उधना।

आचार्यश्री महाश्रमणजी की विदुषी सुशिष्या डॉ. साध्वी परमयशजी के सान्निध्य में 'संस्कारों के जागरण की शाला' के कार्यक्रम का समायोजन हुआ। डॉ. साध्वी परमयशजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि बच्चे देश का भविष्य हैं। संघ का गौरव हैं। परिवार की गरिमा हैं। बालक भगवान के देवदूत हैं। संस्कार किसी Mall में नहीं, Market में नहीं, परिवार के माहौल में मिलते हैं। संस्कार निर्माण की पहली unit है परिवार। संस्कार संपन्न बनने की दूसरी unit है ज्ञानशाला। जहाँ बच्चे Zero से Hero बन जाते हैं। मन के मालिक बन जाते हैं।

खुद के भाग्य विधाता बन जाते हैं। बच्चों का संस्कारी बनाना देश के संचालन से ज्यादा महत्वपूर्ण है। एक श्रेष्ठ बालक का निर्माण सौ स्कूल से बेहतर है। प्राचीन समय में दादी नानी की कहानियां लोरियाँ से बच्चे नैतिक मूल्यों का प्रशिक्षण प्राप्त करते थे, जिस घर के बच्चे संस्कारी वह घर माता का आभारी। मां एक टीचर एक गाइड एक डायटीशियन बनकर संस्कार देती हैं। डॉ. साध्वी परमयशजी, साध्वी विनम्रयशजी, साध्वी मुक्ताप्रभाजी और साध्वी कुमुदप्रभाजी ने 'Bright Present Bright Future ज्ञानशाला सिखलाए' गीत का संगान किया। ज्ञानशाला दिवस पर तेरापंथ समाजाध्यक्ष नेमीचंद पोरवाड़ ने सबका

स्वागत किया। ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय संयोजक सोहनलाल चोपड़ा, गुजरात के आंचलिक संयोजक मनीता चोपड़ा, Joint Commissioner of Police सूरत सजन सिंह परमार, प्रवीण मेडतवाल, मुख्य प्रशिक्षिका उधना की ऊषा डांगी आदि सभी ने ज्ञानशाला दिवस के उपलक्ष्य में भावों की अभिव्यक्ति दी। ज्ञानशाला दिवस पर उधना, पांडेसरा, लिम्बायत, भेस्तान और सचिन ने बहुत ही Beautiful, wonderful and the Best Performance प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संयोजन ज्ञानशाला की प्रशिक्षिका पुष्पा चपलोट और सरोज बाबेल ने किया और आभार ज्ञापन मनिषा कोठारी ने किया।

संस्कार ही जीवन की मजबूत नींव

नोखा।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा द्वारा संचालित ज्ञानशाला में ज्ञानशाला दिवस का आयोजन उत्साह एवं आध्यात्मिक वातावरण में किया गया।

ज्ञानशाला प्रभारी महावीर नाहटा ने अभिभावकों का आह्वान करते हुए कहा कि बच्चों के सर्वांगीण विकास में अभिभावकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने अभिभावकों से

बच्चों को नियमित रूप से ज्ञानशाला भेजने तथा उनके संस्कार निर्माण के प्रति जागरूक रहने का आग्रह किया।

सभा अध्यक्ष शुभकरण चौरडिया, कवि इंद्रचंद्र बैद एवं सुनील बैद ने बच्चों को व्यसनमुक्त जीवन जीने, प्रतिदिन नवकार मंत्र की माला का जप करने तथा झूठ एवं चोरी जैसे दुर्गुणों से दूर रहने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि बाल्यावस्था में प्राप्त संस्कार ही जीवन की मजबूत नींव बनते हैं। प्रशिक्षिका राजकुमारी

मरोठी ने कहा कि ज्ञानशाला के माध्यम से बच्चों में नैतिक मूल्यों की स्थापना एवं संस्कारों का विकास होता है।

प्रशिक्षिका रेखा सेठिया एवं सोनू बोथरा ने बच्चों को ज्ञानाराधना एवं धार्मिक संस्कारों का प्रशिक्षण प्रदान किया। कार्यक्रम लगभग दो घंटे चला। ज्ञानशाला दिवस का आयोजन बच्चों में धर्म, संस्कार, अनुशासन और नैतिक मूल्यों के विकास की दिशा में एक सार्थक पहल रही।

ज्ञानशाला है जागरण की प्रयोगशाला

हैदराबाद।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि दीप कुमार जी आदि ठाणा 2 के सान्निध्य में हैदराबाद में ज्ञानशाला दिवस का आयोजन किया गया। सभी 20 ज्ञानशालाओं का सामूहिक आयोजन बहुत ही उत्साह पूर्वक किया गया। इसके प्रथम चरण में जागरूकता रैली का आयोजन किया गया। परामर्शक अंजू बैद ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि द्वय के मंगल मंत्रोच्चार के साथ हुआ।

शिवरमपल्ली ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों द्वारा खूबसूरत नृत्य नाटिका पेश की गई, ज्ञानशाला की वार्षिक रिपोर्ट क्षेत्रीय संयोजक संगीता गोलछा द्वारा प्रस्तुत की गई। ज्ञानार्थियों द्वारा कव्वाली के रूप में आकर्षक मंचीय प्रस्तुति दी गई। मुनि दीप कुमार जी ने

अपने प्रेरणादाई वक्तव्य में ज्ञानशालाओं का उत्साह वर्धन करते हुए 'ज्ञानशाला है जागरण की प्रयोगशाला' विषय पर सारगर्भित विचार रखें मुनि श्री ने कहा कि तेरापंथ धर्म संघ में ज्ञानशाला एक महीनीय प्रवृत्ति है जिसमें हजारों की संख्या में बच्चे संस्कार ज्ञान पाते हैं और पूरे देश भर में हजारों की संख्या में ही प्रशिक्षिकाएं अपनी निस्वार्थ सेवाएं देती हैं निश्चित रूप से तेरापंथ धर्म संघ के आचार्य गणाधिपति गुरुदेव तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ जी और वर्तमान में आचार्य महाश्रमण जी से इसको बहुत पोषण और मार्गदर्शन मिलता है मुनीश्री जी ने बच्चों को एक कहानी के माध्यम से क्रोध, लालच, भय व रोग को पराजित करने के लिए बुद्धि, लज्जा, हिम्मत व तंदुरुस्ती का जीवनशैली में शामिल करने की कला को सीखने की प्रेरणा दी मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में फरमाया कि

जिस प्रकार स्कूली शिक्षा बच्चों के जीवन में आवश्यक है जिससे वह आगे चलकर अपना कैरियर उन्नत कर सकता है वैसे ही बचपन में दिए गए ज्ञानशाला के संस्कार जीवन को सार्थक व सफल दिशा दे सकती हैं।

प्रदर्शनी में प्रशिक्षिकाओं द्वारा बनाए गए लोक के दृश्य, 25 बोल की चित्र प्रदर्शनी, आचार्य भिक्षु जन्म संबंधित मॉडल व आध्यात्मिक गेम रखे गए जिनको श्रावक समाज व बच्चों ने बहुत उत्साह से देखा वह आध्यात्मिक गेमस में सहभागिता रखी। महिला मंडल अध्यक्ष नमिता सिंघी, युवक परिषद अध्यक्ष विनोद दूगड़ टीपीएफ अध्यक्ष विरेंद्र घोषल ज्ञानशाला विभाग में सभा प्रभारी अरिहंत गुजरानी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का मंच संचालन काचीगुड़ा ज्ञानशाला की स्थानीय संयोजक प्रभा नाहटा द्वारा किया गया।

मनोबल मजबूत हो तभी तप में आगे बढ़ा जा सकता है

बालोतरा।

प्रोफेसर साध्वी मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में संगीता चोपड़ा और श्वेता सालेचा के मासखमण तप का अभिनन्दन किया गया। कार्यक्रम में साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने कहा- जब व्यक्ति का मनोबल मजबूत होता है, तभी वह तप के क्षेत्र में आगे बढ़ सकता है।

चातुर्मास का समय विशेष तप साधना के लिए माना गया और दोनों तपस्विनी

बहनों ने साहस का काम किया। और सक्रियता के साथ जप प्रवचन श्रवण आदि नियमित रूप से किया है आज उनका संकल्प फलवान हुआ तप का जैन शासन में विशिष्ट स्थान है।

मासखमण तप अभिनन्दन

तपस्वियों का प्रेरक इतिहास पठनीय और आचरणीय है। तप के द्वारा आत्मशुद्धता बढ़ती है और स्वस्थता की अनुभूति होती है। पूर्व संचित कर्मों के नाश के लिए तपस्या विशिष्ट उपक्रम है। ज्ञानशाला

के बच्चों ने रोबोर्ट जैपनीज' कार्यक्रम के द्वारा अनुमोदना की। ज्ञानार्थी परिधि जैन ने आकर्षक शैली में तपस्या की बात कही और आने वाली ग्यारह रंगी तप में जुड़ने का कहा। तपस्विनी संगीता चोपड़ा को उनकी भाभी कमला ओस्तवाल और पुत्र नैतिक चोपड़ा ने वर्धापित किया। सभा उपाध्यक्ष देवीलाल ओस्तवाल ने एवं तेरापंथ सभा अध्यक्ष राणमल फोलामेहता ने अभिनन्दन पत्र का वाचन किया।

पृष्ठ 2 का शेष

तन कर, मन कर...

३. आचार्य तुलसी का अणुव्रत संदेश : परमपूज्य आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत के माध्यम से जैन-अजैन सभी को जीवन में नैतिकता और ईमानदारी अपनाने का संदेश दिया तथा हिंसा व नशा जैसी बुराइयों के परित्याग पर बल दिया ताकि आत्मा का कल्याण हो सके।

ज्ञानशाला : संस्कार निर्माण और मुमुक्षु भाव का केंद्र :

१. तेरापंथी महासभा का नेटवर्क: ज्ञानशालाएं बच्चों में धार्मिक संस्कारों के बीजारोपण का बहुत बड़ा

माध्यम हैं। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के अंतर्गत संचालित इस विशाल नेटवर्क में प्रशिक्षण देने वाली बहनें समर्पण के साथ सेवा दे रही हैं, जबकि स्थानीय तेरापंथी सभा, युवक परिषद आदि व्यवस्था पक्ष देखते हैं।

२. मुमुक्षु निर्माण : ज्ञानशाला के माध्यम से यदि बच्चों में मुमुक्षु भाव भी जागृत हो जाए तो उनके जीवन का मार्ग प्रशस्त हो सकता है। श्रावक-श्राविकाओं को भी अपने संयम के प्रति निरंतर जागरूक रहना चाहिए।

आयंबिल प्रत्याख्यान व दिल्ली जैन

समाज की सहभागिता :

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में अनेक महिलाओं ने पूज्य आचार्य प्रवर के श्रीमुख से आयंबिल का प्रत्याख्यान ग्रहण किया। आचार्य श्री की मंगल सन्निधि में बड़ी संख्या में दिल्ली जैन समाज के लोग उपस्थित हुए। इस अवसर पर विविध संस्थाओं और समाजों के प्रतिनिधियों ने अपनी भावांजलि व्यक्त की, जिनमें सुखराज सेठिया, लहरसिंह सिरोहिया (राज्यसभा सांसद), के. सी. जैन थे। युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी ने मंगल उद्बोधन प्रदान किया।

पृष्ठ 19 का शेष

शारीरिक स्वास्थ्य, प्रसन्नता....

चार्वाक दर्शन बनाम जैन कर्मवाद व आत्मवाद :

१. चार्वाक का नास्तिक दृष्टिकोण: चार्वाक दर्शन एक नास्तिक दर्शन है जो नास्तिक दर्शन से संबद्ध है। उनके अपने विचार हैं कि खूब मौज-मस्ती, भोग-विलास करो, खाओ-पीओ मौज करो। पूज्यश्री ने उदारता व्यक्त करते हुए फरमाया कि मैं नास्तिक आदमी की भी अवज्ञा नहीं करना चाहता क्योंकि सबके अपने विचार और दृष्टिकोण हैं। यह दर्शन पुनर्जन्म को नहीं मानता है, केवल वर्तमान जीवन को ही स्वीकार करता है। इसलिए उनके अनुसार त्याग, तपस्या, कष्ट सहना सब व्यर्थ हैं; जब तक जिओ खूब भौतिक सुखों का भोग करो।

२. जैन दर्शन का शाश्वत सिद्धांत: एक आस्तिकवादी अर्थात् आत्मवादी दर्शन है जिसमें आत्मा का शाश्वत अस्तित्व माना गया है। आत्मा हमेशा थी, वर्तमान में है और आगे हमेशा रहेगी। जैन दर्शन में पुनर्जन्म का सिद्धांत है। यहाँ आत्मावाद, कर्मवाद और लोकवाद का सिद्धांत है।

३. सावधानी और कर्मफल : जैन

दर्शन में कहा गया है कि इस जीवन के बाद फिर आगे कहीं जाना है, इसलिए संभल कर रहना चाहिए। दिन में ऐसा कोई कार्य न करें जिससे कि रात की नींद खराब हो। रात को ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिए कि दिन में खाना मुश्किल हो जाए। जैन दर्शन में आत्मवाद के साथ कर्मवाद का भी सिद्धांत है कि अच्छे कर्म का फल अच्छा और बुरे कर्म का फल बुरा होता है। यदि आदमी त्याग, तपस्या करेगा तो उसका कल्याण होगा और आध्यात्मिक सुख मिल सकेगा।

अनुत्सुकता, अनुकंपा और मोहनीय कर्म का क्षय:

१. सुख त्याग से अनुत्सुकता : आदमी को भौतिक सुखों की कामना का निवारण करना चाहिए। साधु गृहस्थ जीवन को छोड़कर महाव्रतों को स्वीकार करता है और वह अनेक सुख-सुविधाओं का त्याग कर देता है। लंबे विहार में थोड़ा कष्ट भी हो सकता है, अतः पदयात्रा भी एक प्रकार से सुख का त्याग है। आचार्य श्री तुलसी ने अपने जीवन काल में अनेक लंबी-लंबी यात्राएं कीं। उन्होंने कितना परिश्रम और सुख का त्याग किया।

२. अनुत्सुकता से दया और

शांति : शास्त्र में कहा गया कि सुख का निवारण करने से अनुत्सुकता मिलती है। यदि कामना नहीं होती तो उत्सुकता भी अपने आप समाप्त हो जाती है। जो जीव अनुत्सुक होता है वह अनुकंपाशील बन जाता है, उसमें दया की भावना पैदा हो जाती है। इसके कारण वह शांत-प्रशांत रहता है। इसके बाद जीव मोहनीय कर्म का क्षय कर देता है।

पावन प्रेरणा व जीवन सूत्र :

१. सुविधावादी मनोवृत्ति का परित्याग : पूज्यश्री ने फरमाया कि साधु-साध्वियों को खूब परिश्रम करना चाहिए और सुविधावादी मनोवृत्ति का परित्याग करना चाहिए। जब तक स्वास्थ्य अच्छा रहे, अच्छे कार्यों में अपने आपको नियोजित करते रहना चाहिए। साधु को लालसा मुक्त होकर अच्छा काम करना चाहिए।

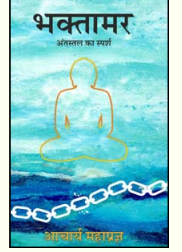
२. जीवन की वास्तविक उपलब्धि : चित्त में शांति और समाधि रहनी चाहिए। मनोबल अच्छा रहे, भयभीत नहीं होना चाहिए। किसी भी स्थिति में शारीरिक स्वास्थ्य, प्रसन्नता और मनोबल—ये तीन चीजें हैं तो एक दृष्टि से हमारा जीवन उपलब्धि पूर्ण है।

बोलती किताब

भक्तामर

भक्ति केवल शब्दों की अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि आत्मा के जागरण का माध्यम है।

'भक्तामर' केवल एक स्तोत्र नहीं, बल्कि आत्मचेतना, श्रद्धा और आध्यात्मिक अनुभूति का दिव्य स्रोत है। आचार्य महाप्रज्ञ ने इस कृति में 'भक्तामर' स्तोत्र के प्रत्येक भाव का गहन आध्यात्मिक विश्लेषण प्रस्तुत किया है। उन्होंने स्पष्ट किया है कि सच्ची स्तुति तभी सार्थक होती है, जब वह केवल वाणी तक सीमित न रहकर हृदय की गहराइयों से प्रस्फुटित हो।



भक्तामर स्तोत्र भगवान ऋषभदेव के प्रति समर्पित भक्ति का अनुपम ग्रंथ है। यह श्रद्धा, विनम्रता, आत्मसमर्पण और आंतरिक शुद्धि की प्रेरणा देता है। पुस्तक में बताया गया है कि स्तुति का वास्तविक उद्देश्य बाहरी चमत्कार नहीं, बल्कि अंतर्मन के अंधकार को दूर कर आत्मप्रकाश की ओर अग्रसर होना है।

आचार्य महाप्रज्ञ ने अपने प्रवचनों में यह समझाया है कि श्रद्धा, भक्ति, बुद्धि और आत्मविश्वास का समन्वय ही जीवन को नई दिशा देता है। जब व्यक्ति अपने आराध्य के गुणों का चिंतन करता है, तब उसके भीतर सकारात्मक परिवर्तन प्रारम्भ होते हैं। यही परिवर्तन जीवन को शांति, संतुलन और आत्मबल प्रदान करता है।

आज के तनावपूर्ण और भौतिकतावादी युग में 'भक्तामर' : अंतःस्थल का स्पर्श' केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि आत्मविकास और आत्मजागरण का प्रेरक मार्गदर्शक है। यह कृति प्रत्येक पाठक को अपने अंतर्मन में झाँकने, श्रद्धा को जीवन का आधार बनाने और आत्मा के प्रकाश का अनुभव करने की प्रेरणा देती है।

इस पुस्तक में स्पष्ट किया गया है कि भगवान के गुणों का चिंतन मनुष्य के भीतर छिपे भय, निराशा, अहंकार और मानसिक अशांति को दूर करने का सामर्थ्य रखता है। जब श्रद्धा के साथ स्तवन किया जाता है, तब मन में आत्मविश्वास, सकारात्मकता और आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार होता है।

इस पुस्तक को ऑनलाइन पढ़ने के लिए

अभी डाउनलोड करें
सम्बोधि ई-लाइब्रेरी ऐप



Readable & Audible Mobile Application

पुस्तक प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें

आदर्श साहित्य विभाग,
जैन विश्व भारती लाइन्स

+91 87420 04849

books.jvbharati.org

books@jvbharati.org

प्रतियोगिता से होता है प्रतिभा का विकास

मडुरै।

कटिहार। मुनि प्रशांत कुमार जी, मुनि कुमुद कुमार जी के सान्निध्य में कटिहार तेरापंथ युवक परिषद द्वारा भाषण प्रतियोगिता आयोजित हुई। जनसभा को संबोधित करते हुए मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा - भाषण प्रतियोगिता में

भाषण प्रतियोगिता का आयोजन

अच्छी प्रस्तुति दी। भाषण प्रतियोगिता का उद्देश्य प्रतिभा का विकास, बोलने की कला का विकास। मंच पर प्रस्तुति देने से साहस एवं आत्मविश्वास बढ़ता है। व्यक्तित्व विकास का एक सुन्दर माध्यम

है इस तरह की प्रतियोगिता। प्रतियोगिता में भाग लेने से व्यक्ति कितना कितना ज्ञान अर्जित कर लेता है। कटिहार में सीपीएस की क्लास भी आयोजित हुई थी जो एक माध्यम बनी प्रतिभा विकास का। बिना देखे बोलने से बोलने की कला का एक अच्छा विकास होता है। बोलने से पूर्व विषय की जानकारी अपेक्षित है। पढ़ने से नई नई जानकारी मिलती है।

तेरापंथ युवक परिषद एक माध्यम बनी है प्रतिभा विकास का साधुवाद। संयोजन मुनि कुमुद कुमारजी एवं श्रेयांस खटेड़ ने किया। आभार अमित पटवारी ने किया।

कोटि कोटि वंदन-अभिनंदन

युवाचार्य महावीर को वंदन, शत-शत अभिनंदन है,
त्याग, तपस्या, संयम का आपमें पावन संगम है।
युवा हृदयों को दिया आपने धर्म का नव आधार,
आपकी वाणी से ही मिलता जीवन को सच्चा सार।
तेरापंथ के गौरव हो आप, संघ का हो अभिमान,
आपके चरणों में झुका है, आज सकल हिंदुस्तान।



श्रद्धाप्रणत

तेरापंथ युवक परिषद, गांधीनगर-बैंगलोर



युवक परिषद पर बरसे, युवाचार्य का आशीष अपार, आपके आशीर्वाद से, हो युवाओं का बेड़ा पार।
धर्म संघ की सेवा में, अर्पित हो हर एक क्षण, आप दिखाओ राह हमें, संयम ही बने भूषण।
महावीर कुमार जी आप, युवाओं की हो पहचान, आपके आशीष से ही, गौरवमयी हो तेरापंथ महान।

परिषद द्वारा तृतीय आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर के शुभारंभ के अवसर पर

श्रद्धाप्रणत

तेरापंथ युवक परिषद, राजाराजेश्वरी नगर



गुरुवर त्रिभुवन तिलक,
परम तितिक्षावान।
युवाचार्य को प्रकट कर,
दिया संघ वरदान।

श्रद्धाप्रणत

मरुधर मित्र परिषद मुम्बई

कोटि कोटि वंदन



स्फटिक तुल्य यह आभामंडल, देख-देख मन मुदित हुआ है।
संघ शिखर पर जैसे कोई, स्वर्णिम सूरज उदित हुआ है॥

श्रद्धाप्रणत

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, जसोल



गुरुवर महाश्रमण कृपा से,
किया है शिखर पर आरोहण।
उपहार संघ को दिया प्रभु ने,
जय हो, जय हो महाश्रमणा॥

श्रद्धाप्रणत

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, घाटकोपर

पूज्य प्रवर का 'सुखकामना के त्याग से क्या मिलेगा' विषय पर विशेष संदेश

शारीरिक स्वास्थ्य, प्रसन्नता और मजबूत मनोबल है जीवन की उपलब्धि : आचार्यश्री महाश्रमण

पूज्य प्रवर ने आचार्य श्री तुलसी की पदयात्राओं व त्याग का दिया प्रेरक उदाहरण

लाडनू।

07 सितम्बर, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने सुधर्मा सभा में उत्तरज्झयणाणि आगम के माध्यम से 'सुखकामना के त्याग से क्या मिलेगा?' विषय पर चतुर्विध धर्मसंघ को पावन देशना प्रदान की। पूज्य प्रवर ने भौतिक व आध्यात्मिक सुख, चार्वाक बनाम आस्तिक दर्शन तथा सुख-सुविधाओं के त्याग से प्राप्त होने वाली 'अनुत्सुकता' के तात्त्विक रहस्य का विस्तृत विवेचन किया।

ऐंद्रियक और अतींद्रिय सुख का तात्त्विक भेद



आत्मा और कर्म सिद्धांत पर विश्वास रखकर दिन-रात ऐसे सत्कर्म करें, जिससे चित्त में सदैव समाधि और शांति बनी रहे

—आचार्यश्री महाश्रमण



१. आगम प्रश्न व प्राणी स्वभाव: पूज्य आचार्यश्री ने आगमिक प्रश्न को स्पष्ट करते हुए फरमाया कि सुख की स्पृहा (कामना) के निवारण करने से जीव क्या प्राप्त करता है? क्या उत्पन्न करता है? प्राणी के मन में सुख की स्पृहा भी रह सकती है। ऐसा कौन सा सामान्य प्राणी होगा जिसके भीतर में सुख की इच्छा न हो।

२. सुख के दो प्रकार : सुख दो प्रकार का होता है—एक ऐंद्रियक सुख और दूसरा अतींद्रिय या इंद्रियातीत सुख। आदमी इंद्रियों और मन के जगत में जीता है। पांच इंद्रियों के पांच विषय हैं—श्रोत का विषय शब्द, चक्षु का रूप, घ्राण का गंध, जिह्वा का रस और स्पर्श का स्पर्श। ३. भौतिक बनाम आभ्यंतर सुख : शब्द, रूप, गंध, रस और स्पर्श यह

आचार्य तुलसी : एक संत, एक महायज्ञ और सुख-त्याग का वो शिखर...

पूज्य प्रवर ने त्याग, श्रम और सेवाभाव के आदर्शों को आचार्यश्री तुलसी के जीवन के विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से समझाया।

१. लंबी पदयात्राओं का तप : आचार्यश्री ने आचार्य श्री तुलसी द्वारा की गई अत्यंत कठिन यात्राओं का स्मरण किया। कोलकाता से केलवा/राजनगर और बिदासर से दक्षिण भारत तक की पैदल यात्राएं केवल यात्रा नहीं, बल्कि सुखों का त्याग थीं। पूज्य प्रवर ने स्पष्ट किया कि साधु जीवन में सुविधा की आकांक्षा को छोड़कर विहार करना तप है।

२. दुर्गम मार्गों पर अटूट संकल्प : आचार्यश्री ने फरमाया कि कैसे विपरीत परिस्थितियों, उबड़-खाबड़ रास्तों और स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों के बावजूद उन्होंने यात्राएं जारी रखीं। उन्होंने भारत के अनेक प्रांतों और अंचलों का भ्रमण किया, जहां की भौगोलिक स्थिति भी अत्यंत कठिन थी।

३. जन-संपर्क और सेवा : इन यात्राओं का मुख्य उद्देश्य समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचना था। वे केवल बड़े शहरों तक सीमित नहीं रहे, बल्कि मेवाड़, मारवाड़, हरियाणा और पंजाब के सुदूर छोटे-छोटे गांवों में गए। आचार्यश्री ने विशेष रूप से बताया कि कैसे साधु-साधवियों के साथ समन्वय बिठाकर उन्होंने जन-संपर्क का बड़ा कार्य किया।

४. संघीय उत्तरदायित्व और निरंतर कार्य: आचार्यश्री ने रेखांकित किया कि संघीय कार्य का प्रबंधन करना, साधु-साधवियों को संभालना और श्रावक-श्राविका समाज को दिशा देना, ये सभी कार्य उनके लिए एक महायज्ञ की तरह थे। पूज्य प्रवर ने आचार्य श्री तुलसी के अंतिम दिनों का उल्लेख किया, जब लगभग 83 वर्ष की आयु में भी, शारीरिक प्रतिकूलता के बावजूद वे बोधरा भवन से तेरापंथ न्यास भवन तक प्रवचन हेतु गए, जो उनके 'सुख-त्याग' के सिद्धांत का जीवित उदाहरण है।

भौतिक जगत है। आदमी के मन में इस भौतिक दुनिया के सुखों को पाने की आकांक्षा रह सकती है। भौतिक जगत से जो सुख मिलता है वह भौतिक, बाह्य

और पौद्गलिक सुख है। दूसरा सुख आभ्यंतर सुख है, जो कर्मों के झड़ने और निर्जीर्ण होने से प्राप्त होता है।

(शेष पेज 16 पर)

युगप्रधान ने 'धर्मकथा से क्या मिलेगा' विषय पर प्रदान किया आगमिक पाठ्य

धर्मकथा से होती है कर्मों की निर्जरा और शासन की प्रभावना : आचार्यश्री महाश्रमण

पूज्य प्रवर ने जेल, विद्यालय व व्यापारिक मंचों पर संयम-ईमानदारी के संदेश देने की दी प्रेरणा

लाडनू।

01 सितम्बर, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मुख्य मंगल प्रवचन कार्यक्रम में सुधर्मा सभा में उपस्थित चतुर्विध धर्मसंघ को स्वाध्याय के पाँचवें अंग 'धर्मकथा से क्या मिलेगा?' विषय पर अमृत देशना प्रदान की। पूज्य प्रवर ने प्रवचन व व्याख्यान को स्वयं के आत्म-कल्याण और धर्म प्रभावना का सशक्त माध्यम बताया।

स्वाध्याय का पाँचवाँ अंग :

१. धर्मकथा (प्रवचन व व्याख्यान)

ज्ञान का वितरण : पूज्य आचार्यश्री ने फरमाया कि स्वाध्याय के प्रथम चार अंग वाचना, प्रतिपृच्छना, परिवर्तना और अनुप्रेक्षा हैं, जिनके द्वारा ज्ञान को आत्मसात किया जाता है। इस प्राप्त ज्ञान को यथाऔचित्य दूसरों तक पहुँचाने का माध्यम पाँचवाँ अंग 'धर्मकथा' है। सीधी भाषा में धर्मकथा का तात्पर्य प्रवचन या व्याख्यान देना है।

२. अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान व जीवन



अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान की त्रिवेणी में जो स्नान करेगा, वह श्रेष्ठ इंसान बन जाएगा

—आचार्यश्री महाश्रमण



विज्ञान की त्रिवेणी : आचार्य श्री ने 'त्रिवेणी' का एक बहुत ही सुंदर और प्रेरणादायक प्रसंग प्रस्तुत किया है। पूज्य प्रवर ने धर्म संघ द्वारा संचालित तीन प्रमुख जन-कल्याणकारी कार्यक्रमों को 'त्रिवेणी' की संज्ञा दी है:

अणुव्रत : नैतिकता और संयम का मार्ग। प्रेक्षा ध्यान : मानसिक शांति और आत्म-साधना का मार्ग।

जीवन विज्ञान : जीवन जीने की कला और सकारात्मक दृष्टिकोण। आचार्य श्री ने फरमाया कि ये तीन कार्यक्रम आम जनता के लिए मानवता की दृष्टि से अत्यंत उपयोगी हैं। ये केवल एक संप्रदाय तक सीमित नहीं हैं, बल्कि जैन और गैर-जैन, हर किसी के लिए लाभदायक हैं। इस प्रसंग के माध्यम से पूज्य प्रवर ने आह्वान किया कि व्यक्ति

को इन तीनों के 'संगम' में डुबकी लगाकर अपने जीवन को नैतिक और अर्थपूर्ण बनाना चाहिए।

धर्मकथा से प्राप्त होने वाले ३ महान आगमिक लाभ :

पूज्य प्रवर ने शास्त्रों के आधार पर धर्मकथा के तीन मुख्य लाभों का विवेचन किया।

१. कर्मों की निर्जरा : धर्मकथा करने वाला निर्जरा करता है। प्रवचन के समय भीतर का अध्यवसाय शुभ योग में रहता है। वचन का पुरुषार्थ होता है और गर्मी या असुविधा को शांतिपूर्वक सहने से कायिक व मानसिक तप द्वारा निर्जरा का लाभ मिलता है।

२. धर्म प्रभावना व वाणी का संयम : व्याख्यान देने वाला धर्म की प्रभावना करता है। वक्ता को विशेष ध्यान रखना

आप कौन : श्रोता, सोता या सरोता?...

आचार्य श्री ने श्रोताओं को मुख्य रूप से तीन श्रेणियों में विभाजित किया है:

१. श्रोता : ये वे जन हैं जो केवल धर्म-लाभ और आत्म-कल्याण की भावना से प्रवचन को ध्यानपूर्वक सुनते व ग्रहण करते हैं।

२. सोता (निद्रालु श्रोता) : ये वे लोग हैं जो व्याख्यान के दौरान निद्रा के वश हो जाते हैं। पूज्य प्रवर ने फरमाया कि ऐसे लोग प्रवचन में आकर 'श्रोता' नहीं, बल्कि 'सोता' बन जाते हैं।

३. सरोता : यह सबसे सटीक और रोचक उपमा है। जिस प्रकार 'सरोता' सुपारी को काटने और टुकड़े करने का कार्य करता है, उसी प्रकार कुछ लोग केवल वक्ता की बात को पकड़ने,

उसका गलत अर्थ निकालने और आलोचना का 'मसाला' तैयार करने के उद्देश्य से आते हैं। इनका लक्ष्य ज्ञान पाना नहीं, बल्कि बातों को काटकर विवाद खड़ा करना होता है।

संदेश एवं पाठ्य :

श्रोता के लिए : धर्म-श्रवण में भावना (Intent) सर्वोपरि है। कमियाँ ढूँढने की प्रवृत्ति का त्याग कर केवल आत्म-शुद्धि के भाव से वाणी को ग्रहण करें।

वक्ता के लिए : श्रोता चाहे सो रहा हो या आलोचना के आधार तलाश रहा हो, वक्ता को अपने पथ से विचलित नहीं होना चाहिए। वक्ता का एकमात्र लक्ष्य 'कर्म-निर्जरा', 'धर्म-प्रभावना' और हृदय में 'अनुग्रह की भावना' होना चाहिए।

चाहिए कि परिषद में किसी का नाम लेकर गलत रूप में टिप्पणी न करे, जिससे अप्रभावना हो। प्रवचन ऐसा हो जिससे लोगों में धर्म के प्रति रुझान बढ़े।

३. सुकृत का बंध : धर्मकथा का प्रभावक भविष्य के लिए कल्याणकारी कर्मों और उच्च पुण्य का बंध करता है।

साधु-साधवियों के लिए पूज्य प्रवर के विशेष निर्देश :

१. नियमितता व श्रम की परवाह नहीं : श्रद्धा के क्षेत्र में २-३ सप्ताह या १ महीने का प्रवास हो, तो आठ प्रहर में कम से कम एक बार व्याख्यान होना चाहिए। अपने श्रम की अधिक परवाह

किए बिना उपदेश देना चाहिए, क्योंकि इससे वक्ता स्वयं भी लाभान्वित होता है।

२. समय का अनुशासन व पूर्व तैयारी : व्याख्यान सही व निर्धारित समय पर प्रारंभ हो और समापन में अनावश्यक देरी न हो। वक्तव्य को प्रभावशाली बनाने के लिए पूर्ण तैयारी के साथ जाना चाहिए।

३. सार्वजनिक मंचों पर नैतिकता का संदेश : विद्यालय, जेल, व्यापारी, वकील या राजनीतिक मंचों पर अवसर मिलने पर संयम, नैतिकता और ईमानदारी की बातें अवश्य बतानी चाहिए ताकि जन-जन का जीवन सुधर सके।

प्रतिभा और परिश्रम से खिलता है ज्ञान, दूसरों को पढ़ाना भी है बड़ी सेवा : आचार्यश्री महाश्रमण

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने 'श्रुताराधना से क्या मिलेगा' विषय पर प्रदान किया आगमिक पाथेय

लाडनू।

02 सितम्बर, 2026

जन-जन को सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति की प्रेरणा प्रदान करने वाले जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, अहिंसा यात्रा प्रणेता, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी सुधर्मा सभा में 'श्रुताराधना से क्या मिलेगा?' विषय पर उत्तरज्झयणाणि (उत्तराध्ययन) आगम के आलोक में पावन पाथेय प्रदान किया। पूज्य प्रवर ने श्रुताराधना को आत्म-विशुद्धि और भीतरी प्रसन्नता का मुख्य आधार बताया।

चार काल का स्वाध्याय और साधना पद्धति :

१. स्वाध्याय का आगमिक समय : आगम स्वाध्याय की पात्रता और समय निर्देश का उल्लेख करते हुए, पूज्यश्री ने फरमाया कि दिन और रात के चार-चार प्रहरों में से दूसरे प्रहर (दिन व रात्रि) में ध्यान तथा प्रथम व चौथे प्रहर में स्वाध्याय का विधान है।

२. न्यूनतम स्वाध्याय का संकल्प : तेरापंथ धर्मसंघ की साधु परंपरा में प्रतीकात्मक रूप से चार काल के स्वाध्याय का विधान है। यह चार काल का स्वाध्याय न्यूनतम है; साधक को



”

आदमी को दुखी और सुखी बनाने में उसका अपना चिंतन और दृष्टिकोण ही कारण बनता है
-आचार्यश्री महाश्रमण

तो सदैव स्वाध्यायलीन रहने का प्रयास करना चाहिए।

३. शिक्षा व ज्ञान का महत्व : साधु हो या गृहस्थ, ज्ञान का दोनों के लिए अत्यधिक महत्व है। गृहस्थ शिक्षा के लिए देश-विदेश जाते हैं, वहीं साधु जीवन में भी श्रुताराधना और ज्ञानार्जन का अपना विशिष्ट स्थान है।

श्रुताराधना से प्राप्त होने वाले २ प्रमुख

आगमिक लाभ :

उत्तरज्झयणाणि सूत्र के आधार पर पूज्य प्रवर ने श्रुताराधना के मुख्य लाभों का विवेचन किया।

१. अज्ञान का नाश और भीतरी प्रह्लाद : ज्ञानावरणीय कर्म के उदय से अज्ञान रूपी अंधकार आता है, जिसे ज्ञान रूपी प्रकाश से ही दूर किया जा सकता है। ज्यों-ज्यों साधक श्रुत में अवगाहन करता है, त्यों-त्यों ज्ञान, श्रद्धा और संवेग जागता है, जिससे साधक को आत्मिक सुख और प्रह्लाद (प्रसन्नता) मिलता है।

२. राग-द्वेष से मुक्ति और निर्मल दृष्टिकोण : श्रुत की आराधना से व्यक्ति राग-द्वेष के भावों से संक्लिष्ट (मलिन) और दुखी नहीं बनता। इससे चिंतन प्रशस्त और दृष्टिकोण निर्मल बनता है। मनुष्य के सुख-दुख का

मुनि थिरपाल जी और मुनि फतेहचंद जी का निवेदन

प्रवचन में आचार्य प्रवर ने धर्म संघ के इतिहास के दो महान संत— मुनि थिरपाल जी और मुनि फतेहचंद जी—का स्मरण किया। पूज्य प्रवर ने फरमाया कि इन दोनों संतों ने परम वंदनीय आचार्य श्री भिक्षु से विनम्र निवेदन किया..

थे हो बुद्धिमान थां में ज्ञान रो उजास है...
थारै ऊपर देखो म्हांरो पूरो विश्वास है...
कुण दूजो दिल आवेला, ओ संतां !!!

छोड़ो आप अबै डं तपस्या ने म्हारे वास्ते...
लोंगां रो कल्याण हुवै लागो उण रासते...
जबरी जागृति आवेला, ओ संतां !!!

ज्ञान और तपस्या का संतुलन :
स्पष्ट किया गया कि जिन संतों में प्रज्ञा, प्रतिभा और बुद्धि का विशेष उजास है, उन्हें केवल तपस्या तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए। उन्हें अपनी शक्ति का उपयोग ज्ञान के प्रसार, लेखन, अनुवाद और लोगों को प्रतिबोध देने में भी करना चाहिए।

दरवाजे बंद, त्रिपाल ताना... फिर कैसे हुआ अंधेरे का आना?..

बहु को हिदायत : एक बार सास ने घर से बाहर जाते समय बहु को हिदायत दी कि 'घर में अंधेरा न घुसने पाए'। बहु ने इसे इतना गंभीरता से लिया कि दरवाजे-खिड़कियां बंद कर आँगन में त्रिपाल तक डाल दिया।

अंधेरे का आगमन : शाम को जब घर में अंधेरा छाया, तो वह घबरा गई और लाठी उठाकर दरवाजे-खिड़कियों को पीटने लगी ताकि अंधेरा बाहर निकल

जाए। सास ने लौटकर देखा तो मुस्कराते हुए समझाया कि अंधेरे को डंडे से पीटने की जरूरत नहीं, बस एक दीपक जलाने की आवश्यकता है।

सीख : आचार्य श्री का पावन संदेश: भीतर के अज्ञान रूपी अंधकार को भगाने के लिए व्यर्थ संघर्ष या प्रहार की नहीं, बल्कि ज्ञान का दीपक जलाने की आवश्यकता है। ज्ञान का प्रकाश होते ही अज्ञान का अंधेरा स्वतः समाप्त हो जाता है।

मुख्य कारण उसका अपना चिंतन और दृष्टिकोण ही होता है।

ज्ञान दान को बताया सेवा और प्रतिभा का विकास :

१. पढ़ाने की प्रेरणा : पूज्य आचार्यश्री ने प्रेरणा दी कि जिनमें अच्छी प्रतिभा है, उन्हें विद्यार्थी साधु-साधवियों, समणियों

और मुमुक्षुओं को ज्ञान देना चाहिए। ज्ञान देना भी एक प्रकार की सेवा है।

२. प्रतिभा और परिश्रम का साहचर्य : स्वयं भी पढ़ें और दूसरों को भी यथा अवसर पढ़ाएं। प्रतिभा और परिश्रम के साहचर्य से ही ज्ञान का सर्वांगीण विकास संभव है।

योगक्षेम वर्ष चित्रमय झलकियां



महाप्रज्ञ प्रोग्रेसिव स्कूल के विद्यार्थियों को पूज्य प्रवर का पावन बोध



सुधर्मा सभा



पूज्य प्रवर द्वारा मास खमण पारणा से पूर्व मंगल पाठ (साध्वी विशाल प्रभा)



प्रातः भ्रमण